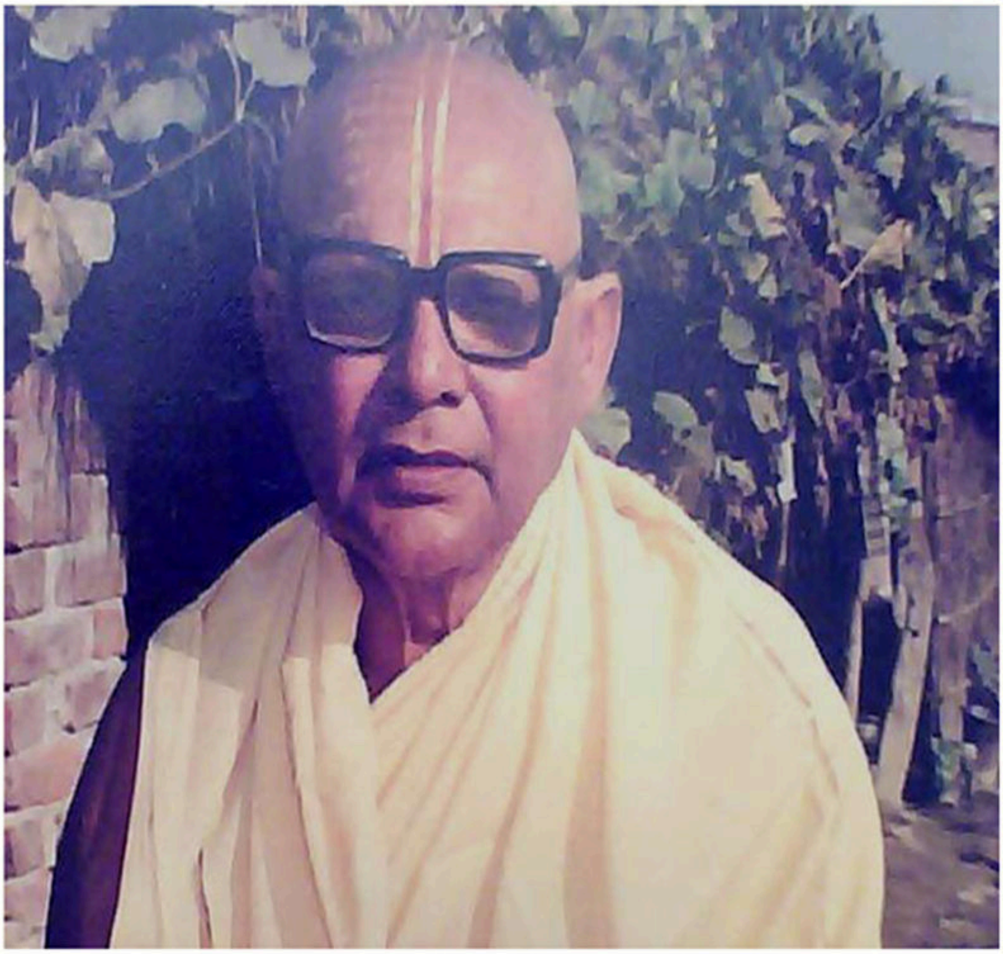
ॐ

"Jai Mauni Baba"

समर्पण



Mauni Baba's Guru Brahmleen Shri Shashtri Baba

धर्मज्ञो धर्मकर्ता च सदा धर्मपरायणः ।

तत्त्वेभ्यः सर्वशास्त्रार्थदिशको गुरुरुच्यते ॥

Mauni Baba

परम पूज्य गुरुदेव अनन्त श्री विभूषित स्वामी श्री शास्त्री श्यामा श्याम शरण जी महाराज

(सीतामढ़ी, बिहार)

के चरण कमलों में सादर समर्पित!

श्री गुरु की वन्दना

(1)

गुरुदेव दया के सागर प्रभु, मैं शरण तुम्हारी आया हूं।
चरणों में अपने रख लेना, बहु आस लगाये आया हूं।।
सब जगह व्याप्त हो दुनिया में, हे निराकारमय परमेश्वर।
हो नित्य शुद्ध अरु नित्य बुद्ध, निज ज्ञान जगाने आया हूं।।
सुखमूल, ब्रह्मआनंद मग्न, हो त्रिगुण रहित साखी सबके।
हे नित्य अचल अरु विमल रुप, मल दूर कराने आया हूं।।
हूं त्रिविध ताप से संतापित, मद, लोभ, मोह ने है घेरा।
कामादिक दुष्ट लुटेरों से, यहँ बार असंख्य लुटाया हूं।।
अपने को पहचानूं ऐसी, न इच्छा कभी हुई मन में।
हो अहंकारमय, घूम रहा, जीवन बहुमूल्य गँवाया हूं।।
कर कृपा उबारो इस भव से, अब एक सहारा है तेरा।

'देवेन्द्र' देख आया जग को, तुझसा तुझको ही पाया हूं।।

(2)

पतित पावन गुरुदेव, शंकर अवतारी।।

देकर तुम ब्रह्मज्ञान, करते दुःख का निदान।

करते निज लाल जान, भक्तन रखवारी।। पतित।।

मन से तुम मोहजाल, क्षण ही देते निकाल।

हरते हिय अंधकार, करते उजियारी।। पतित।।

जीवन की डोर थाम, हर लेते क्रूर काम।

देते निष्काम भक्ति, गमनागमन हारी।। पतित।।

बिन गुरु न पाये ज्ञान, क्यूं ना हो हरि समान।

शंकर या पद्मयोनि, शचिंपति, गिरिधारी।। पतित।।

करना निज दास जान, मुझ पे भी कृपा दान।

माँगत 'देवेन्द्र' भक्ति, चरणन सुखकारी।। पतित।।

(3)

मन में गुरु चरणन को बसाले।

भर आलोक ज्ञान का उसमें, तम को दूर हटाले।। मन।।

चरण अग्र नख सुमिरन से ही, दिव्य दृष्टि मिल जाये।

रज उनके अपने शिर रख कर, आवागमन मिटाले।। मन।।

गुरु ही ब्रह्मा, विष्णु, महादेव, गुरु ही प्रणव कहाये।

ना कोई जग में उनसे बढ़कर, पारब्रह्म कहलाये।। मन।।

रूद्र अगर हो जाय क्रुद्ध तो, सद्गुरु उन्हें मनाले।

अगर क्रुद्ध हो जाय गुरु तो, कोई न उन्हें सम्हाले।। मन।।

वेद मंत्र गुरुवचन जानकर, राह वही अपनाले।

कोटि जन्म के पाप मिटे, एक बार शरण तू आले।। मन।।

(4)

मनुज रुप में ब्रह्म गुरु है, सुन्दर सुखद ललाम।

चरण में कोटि असंख्य प्रणाम।

किस विधि विनय करुं में तेरा, हूं बालक अज्ञान।

चरण में कोटि असंख्य प्रणाम।

देते हैं गुरुज्ञान ब्रह्म का, हर लेते अघ कोटि जन्म का।

देकर भक्ति हृदय में जन का, नष्ट करे अज्ञान।। चरण।।

भव सागर से पार उतारे, बिनु गुरु नैया कौन उबारे।

तरे न भव निधि, बह चाहे हो, हरि अज रुद्र समान।। चरण।।

प्रभु का नाम बना है नैया, चरण गुरु ही उसे खेवैया।

चरण भक्ति से ही मिलता है, प्रभु का पावन धाम।। चरण।।

महिमा कोई जान न पाये, भक्ति भाव से शीश नवाये।

हार गये जब शेष नाग, फिर मैं तो धूलि समान।।

कृपा कर चरण भक्ति दो दान।। मनुज.।।

(5)

गुरु की महिमा कोऊ ना जाने, हैं वे बड़े महान।

हारे चारों वेद शास्त्र सब, बाइबिल ओ कुरान।

करले चरणों का ध्यान, करले चरणों का ध्यान।।

शिष्यों की रक्षा वे हरदम, मातु पिता सम करते।

दुःख में सारे छोड़ चले, एक गुरु साथ हैं रहते।

दिव्य ज्ञान अमृत का देकर, हरते विष अज्ञान।। हारे।।

शंकर ही कल्याण करन को, गुरु रुप में आये।

ंगा से भी अति पावन, गुरु चरण कमल कहलाये।

मिले मोक्ष उनको, जो करता, है चरणामृत पान।। हारे।।

जीवन देते, पालन करते, वहीं मृत्यु हैं लाते।

सुर, नर, मुनि सब चरण भक्ति से, परम धाम को जाते।

तन, मन, धन सब उनको ही, करते हम उन्हें प्रदान।। हारे।।

(6)

हूं गुरुदेव, बड़ा अज्ञानी, किस विधि ध्याऊं मैं तुझको।

जानूं ना हे स्वामी, देना, ज्ञान प्रभु इसका मुझको।। हूं।।

ना जानूं मै पूजा वन्दन, ना जानूं तप, योग जपन।

निद्रा, तंद्रा आलस घेर्‌यो, देवे ना कछु करन मनन।

किस विधि बचूं मैं, इन दुष्टों से, दीजै राह बता मुझको ।। हूं।।

ब्रह्म रुप, हो तू इस जग में, तीनहुं लोक बसे हैं पद में।

बिन गुरु पार करे भवसागर, ऐसा कोई नहीं त्रिभुवन में।

देकर ज्ञान सुधा, तुम करते हो उजियाला मानस को ।। हूं।।

हरदम ध्यान करुं मैं तेरा, ऐसा कर दो मानस मेरा।

सुख दुःख में सम रहूं प्रभु मैं, जग में दास कहाऊं तेरा।

करदे कृपा शरण में आया, मैं भी पाऊं चिर सुख को ।। हूं।।

(7)

विनय प्रभू, किस विधि करुं तुम्हार।

हौं गुरुदेव परम मूरख अति कामी कुटिल गंवार।। विनय।।

लोभ, मोह, मद माया घेरो, छिन्यो चैनहमार।

चाहूं छोड़न पर ना छोड़्यो, सुत, मित, बन्धु पछार।। विनय।।

समय मिले इन सबसे पलना, ध्याऊं चरण तुम्हार।

इन्द्रिन चाहे बस भौतिक सुख, दीनी मति विगाड़।।

एक सहारा तेरा स्वामी, लीजै हमें उबार।

(8)

जगत की झूठी है सब रीत।

एक गुरु का चरण कमल ही, सांचा तेरा मीत।। जगत।।

सुत वनितादिक देखन ही में, लागत जग में हीत।

मिटे स्वार्थ कोई बात न पूछत, भूले सकल पिरीत।। जगत।।

ब्रह्म जीव के मध्य अवस्थित, माया गावे गीत।

माया जाल हटाकर सद्‌गुरु, दुहूं में बाढ़ै प्रीत।। जगत।।

चरण कमल से नेह लगाले, जीवन जाये बीत।

ब्रह्म ज्ञान धारण कर हिय में, ले कामादिक जीत।। जगत।।

श्री गणेश वन्दना

(9)

सुमिरौं गणपति सिद्ध गुसाँई।

सकल विघ्न हर्ता सुर सांई ।। सुमिरौं।।

गौरी पुत्र विनायक स्वामी, घट–घटवासी अंतरजामी।

सुमिरत होय दूर सब संकट कोटि अमंगल क्षणहिं नसाँई ।। सुमिरौं।।

वक्रतुण्ड पीताम्बरधारी, एकदन्त मूषक असवारी।

विघ्नेश्वर का नाम लेत ही, मूल अविद्या जाय नसाँई ।। सुमिरौं।।

धूम्रवर्ण गजमस्तकधारीं, लम्बोदर कर मोदक धारी।

गणपति भालचंद्र असुरारी, नाम अनंत वरनि ना जाई ।। सुमिरौं।।

करौं वंदना प्रथम तुम्हारी, जै जै जै संतन सुखकारी।

मांग रहा 'देवेन्द्र' चरण की भक्ति दान हे त्रिभुवन साँई ।। सुमिरौं।।

(10)

सुरों के नायक तुम्हीं गजानन, तुम्हीं हो संकट मिटाने वाले।

हे गौरी के सुत उमेश नंदन, करें सकल जन तुम्हारे वन्दन।

हूं मैं तुम्हारी शरण में आया, गणेश मूषक सवारी वाले।। सुरों।।

हे हाथी का सिर लगाने वाले, हे एकदन्ती कहाने वाले।

वसन पीताम्बर कमर सुहाय, तुम्हीं लम्बोदर कहाने वाले।। सुरों।।

दया के सिन्धु हे नाम तेर, मिटा दो संकट समस्त मेरा।

करें भजन हम सदा तुम्हारे, हे भक्तवत्सल कहाने वाले।। सुरों।।

(11)

जय गजवदन विनायक दाता।

जो नित प्रथम तुझे है ध्याता, कभी न दुःख वह जन है पाता।। जय।।

लम्बोदर पीताम्बर सोहे, चार भुजा मन को अति मोहे।

उर मणिमाल कियो है धारण, मूश सवारी तुझको भाता।। जय।।

मोदक लड्डू तुझको भाये, सुमिरत ही सब विघ्न नसाये।

दूर होय अघ कोटि जन्म के, परम धाम को वह पा जाता।। जय।।

ऋद्धि सिद्धि के स्वामी गणपति, महिमा बरनि सके ना अहिपति।

देना चरण कमल की भक्ति, शिव सुत जगदाधार विधाता।। जय।।

जो नित प्रथम तुझे है ध्याता, कभी न दुःख वह जन है पाता।। जय।।

(12)

मंगल मूरति विघ्न विनाशक। कृपासिंधु गजवदन विनायक।।

मोदक प्रिय भक्तन हितकारी। लम्बोदर गणपति असुरारि।।

धर्म अर्थ सुख विद्या दायक। मूषक वाहन जय सुर नायक।।

शंकर सुवन उमा के बालक। चार भुजा सुर नर मुनि पालक।।

प्रथम पूज्य गणनाथ दयामय। नाम उचारत विघ्न होत क्षय।।

बन्दन करौं गणेश तुम्हारा। करहु मनोरथ पूर्ण हमारा।।

(13)

हे गिरिजा नंदन गण नायक, प्रभु करौ चरण वन्दन तेरा।

होकर कृपालु मुझ अधमी पे, अब करहु दूर सब अध मेरा ।। हे।।

है नाम तुम्हारा अघहारी, मैं हूं अति अधम नीच लोभी।

ना धर्म कर्म कुछ जान सका, भ्रम रहा विषय में मन मेरा ।। हे।।

हूं धिरा मोह मायादिक से, सुत वनितादिक के बंधन में।

किस विधि बंधन को तोड़ू मैं, ना रहा बुद्धि पर वश मेरा ।। हे।।

हे दयासिंधु बुद्धि दायक, ऐसा मन करदे तू मेरा।

मन रहे भजन में मस्त सदा, बस एक सहारा है तेरा ।। हे।।

(14)

गणपति नाम शोक दुःख हारी।

नाम लेत ही विघ्न नष्ट हों, भये मुद मंगल कारी।। गण.।।

पहले किसकी पूजा होवे, सोचय त्रिभुवन सारा।

बोले भगवान पहले घूमें, जो जग को त्रयबारा।। गण.।।

चले घूमने सकल देवगण, चढ़, निज–निज असवारी।

श्री गणेश की मूस सवारी, पड़े सोच में भारी।। गण.।।

नारद बोले हे त्रिभुवनपति, तेरो पितु महतारी।

करले उनका ही त्रिपेक्षण, गूढ़, मंत्र यह भारी।। गण.।।

हुआ प्रथम पूजन गणपति का, सकल देव गये हारी।

दूर होई सब विघ्न हमारे, चाहूं कृपा तुम्हारी।। गण.।।

(15)

गणपति करहु कृपा अब मो पर। विनती करो तुम्हारी जी।।

शंकर सुत गिरिजा के बालक, सुर, नर, मुनि, जन सबके पालक।

पल में सारे असुर संहारे, जब–जब देव पुकारे जी।। गण.।।

गजमस्तक पर छत्र सुहाये, चार भुजा अति मन हर्षाये।

ओढ़न पीत वस्त्र ओं, करते प्रभु तुम मूंस सवारी जी।। गण.।।

मोदक लड्डू भोग लगावे, उठ प्रभात नित शीश नवावे।

उसके विघ्न दूर हो सारे, कहे सद्ग्रंथ पुकारी जी।। गण.।।

(16)

गजानन्द सुखकन्द दयानिधि, हरहु धरा के संकट सारे।

विकल मही है पापभार से, तुम बिन कौन उबारन हारे।। गणा.।।

नित उठ जो नर तुझको ध्यावे, दुख दारिद्र न उसे सतावे।

सुर नर तेरी महिमा गाये, नाम लेत सब कष्ट मिटाये।। गणा.।।

हर–गिरिजा के पुत्र हो प्यारे, कार्तिकेश है भ्रात तुम्हारे।

ऋद्धि सिद्धि के स्वामी तुम हो, संतोषी के जनक कहावे।। गणा.।।

प्रेम से घूप औ दीप दिखावे, रुप तुम्हारा हिय में बसावे।

मिटे पाप सब क्षण में उसके, प्रभु चरणों का दर्शन पावे।। गणा.।।

श्री गणेश एवं महाकाली जी की आरती

(17)

आरती सिद्धि बिहारी की, संग गणपति महतारी की।।

सुबन शंकर के गणनायक, तुम्हीं सुर नर मुनि के पालक।

विघ्न सब नाशनहारी की।। संग।।

मणिनमय सर्पों की माला, हस्ति मस्तक शोभे काला।

वसन पीताम्बरधारी की।। संग।।

सुहाये चन्द्र शीश ऊपर, लिए कर मोदक लम्बोदर।

चढ़े मूषक असवारी की।। संग।।

कालिका मुण्डमाल पहनी, नृत्य कर रही जगत जननी।।

असुर दल नाशनहारी की।। संग।।

शंम्भू लेटे हैं पद नीचे, खड़ी है मातु जीभ खींचे।

लजाई हाथ कपाली की।। संग।।

दिशा की पहनी है साड़ी, हाथ में ली कृपाण भारी।

कर्ण में नर कंकाली की।। संग।।

करे 'देवेन्द्र' अमर स्तुति, अगर, घृत धूमन की आरति।

गणेश्वर औ महाकाली की।। संग।।

श्री सरस्वती वन्दना

(18)

विद्या की देवी सरस्वती, सब जन गावे महिमा तेरी।

आलोकित कर मेरे मन को, अज्ञान अंधेरी हरु मेरी।।

इक हाथ सुहाये आदिग्रंथ, इक हाथ झनकती है, वीणा।

इक जग को अभय प्रदान करे, स्फटिक माल इक में फेरी।।

धारण करती हो श्वेत बसन, औ' करे सवारी हंसों की।

ब्रह्माच्युत रुद्र सहित सुरगण, निशिवासर विनय करे तेरी।।

जग का हित करने को क्षण में, भरमा देती मन दुष्टों के।

तपकर भी पाया कुम्भकरण, वरदान नींद जग मति फेरी।।

गुरु शाप पाये हो गये हीन मति अरु विद्या से याज्ञवल्क्य।

हो गये ज्ञानियों में आगे, क्षण ही जब गहे शरण तेरी।।

बढ़ रही अविद्या जगत मध्य, आलोक क्षीण होता जाता।

'देवेन्द्र' असंख्य नमन करता, कर कृपा उबारो बिन देरी।।

(19)

मां शारदे तुम्हारी, महिमा बड़ी निराली।

सुन द्वार तेरे आया, वीणा बजाने वाली।। मां।।

विद्या की देवी तुम हो, तम दूर करने वाली।

मेरी भी दूर करे दे, मैया अविद्या काली।। मां।।

हूं कण्टकों धिरा मैं, तुम हो चमन की माली।

कर दूर मेरे कांटे, बन जाऊं फूल डाली।। मां।।

मन घिर रहा तिमिर में, मद लोभ मोह जाली।

माया हटा भवानी, दीजै मुझे उजाली।। मां।।

भव मध्य नाव डोले, तू ही बचाने वाली।

'देवेन्द्र' को पिला दे, आलोक ज्ञान प्याली।। मां।।

श्री सीता वन्दना

(20)

करुं वन्दन सियाजू की, प्रकट भई फार के धरणी।

भये आनंद पुरवासी, जनक महराज संग धरणी।।

जड़ित रत्नों का सिंहासन, अभय देती सकल जग को।

सुहाये क्षत्र मस्तक पे, पधारी जगत की जननी।।

चंवर लेकर खड़ी सखियां, करे गुण गान महिमा की।

करें विनती अमर, ऋषिगण, करो कल्याण भवतरणी।।

करे गायन मधुर आलाप से, गंधर्व औ परियां।

सुवासित फूल बरसाये, विमानारूढ़ सुर तरुणी।

करीं लीला जगत में आ, धरम नारी का सिखलाई।

किया उपदेश तारक राम का, 'देवेन्द्र' जग तरणी।।

(21)

प्रणवौं चरण कमल सिय केरी।

जा ऋषि मुनि नित ध्यान लगावत, राखय उर में घेरी।।

मिथिला भूमि पुनीत सुहावन, सीतामढ़ी बसेरी।

प्रकटी जहँ मिथिलेश कुमारी, जनक भूमि मख केरी।।

नाम लेत सुख उपजत भारी, विनसे विघ्न घनेरी।

होय प्रकाश ज्ञान का हिय में, तम न रहे, बिन देरी।।

पालन, पोषण अरु संहारण, घरि बहुरूप करेरी।

कोटि अनन्त भुवन अगणित, शिव, ब्रह्मा, विष्णु जनेरी।।

सीता नाम लेत मुख मांही, हिय में राम बसेरी।

हो 'देवेन्द्र' दूर यम का भय, आवागमन मिटेरी।।

(22)

जपले नाम विदेह दुलारी।

मेटन कष्ट संत जन का ही, प्रकटी भूमि विदारी।। जपले।।

हुआ स्वयंवर धनु तोड़न का, शिवशंकर का भारी।

व्याहे राम पिनाक तोड़कर, पारब्रम्ह अवतारी।। जपले।।

वन में जाकर नाश कराई, दल निशाचर सारी।

अनुज संग रावण मरवाकर, भू का भार उतारी।। जपले।।

सहसबाहु से हारे रघुवर, पड़े शोक में भारी।

काली रुप बनाकर उसको, जा पाताल संहारी।। जपले।।

पति को सौंपी पुत्र कुश–लव, वीर महाधनु धारी।

किया प्रवेश सिया धरणी में रखियो लाज हमारी।। जपले।।

श्री अम्ब वन्दना

(23)

मैया मेरी द्वार खड़ा मैं तेरी।

सारे जग से हूं ठुकराया, ठौर कहीं न मेरी।। मैया।।

झूठे जग के बंधन सारे, पांव में डाले बेरी।

सुत, पितु, मातु, मित्र ओ नारी, अंत समय मुख फेरी।। मैया।।

लख चौरासी के चक्कर में, युग बीते बहुतेरी।

हानि लाभही सोचत–सोचत, कोटिहु जन्म कटेरी।। मैया।।

शरण में रख ले अपनी मैया, कर ना भवानी देरी।

अधम उद्धारण नाम तिहारो, अरज सुनो मां मेरी।। मैया।।

(24)

मैया सुनियों अरज हमारी।

द्वार खड़ा हूं कब से तेरी, चाहूं शरण तुम्हारी ।। मैया।।

तू ही काली, तू ही दुर्गा, महामाया अवतारी।

तू ही हरि, अज, शिव हो करती, पालन, सृजन, सहांरी ।। मैया।।

जग के रिश्ते सब स्वारथ के, सुत, पितु, मित ओ नारी।

एक तुम्ही से सच्चा नाता, हे जग की महतारी ।। मैया।।

हूं मति मंद, मूढ़, अति कामी थीर न बुद्धि हमारी।

लज्जा रख ले निज नामों की, है तू अधम उधारी ।। मैया।।

(25)

करो मां निज भक्ति का दान।

नहीं चाहूं दूजा वरदान।।

यह तन मेरा, वह धन मेरा; यह सब है माया का फेरा।

तन, मन, धन, सब तेरा ही; करता हूं तूझे प्रदान।। करो।।

ना भौतिक सुख की है इच्छा; ना लेना दुःख दे के परीक्षा।

कर दो ऐसा, सुख–दुख को; जानू मैं एक समान।। करो।।

करता रहूं गान मैं तेरा; एक यही संबल हो मेरा।

लगन नहीं यह छूटे मैया; जब तक घट में प्राण।। करो।।

(26)

हे जगदम्ब जगत मां काली, बिनती करौं तुम्हारी।

बिनती करौं तुम्हारी अम्बे, बिनती करौं तुम्हारी।

कर अपराध क्षमा सब मेरे, हरियो पीर हमारी।। हे.।।

नरक देखकर गर्भवास में, कौल किया था भारी।

लूंगा नाम धरा पर हरदम, करियो मां उद्धारी।। हे.।।

कृपा पाय आया इस जग में बीती उमरिया सारी।

माया में लपटाय भुलाया, सारी कौल हमारी।। हे.।।

बालापन को खेल गंवायो, युवा नाच संग नारी।

देख बुढ़ापा याद पड्यो, निज कौल गर्भ की सारी।। हे.।।

करना पार मुझे भी है, अधनाशन नाम तुम्हारी।

चरण कमल का दास बनाकर, मेटो पीर हमारी।। हे.।।

(27)

मैया चरणन् दास बनाले।

मेरे हिय में ज्योति जला दे।। मैया.।।

मंदिर खोजा, मस्जिद खोजा; गिरजाघर, गुरुद्वारा खोजा।

कहीं न पाया जग मथ डाले।। मैया.।।

घर में खोजा, वन में खोजा; तीरथ, देश, विदेशहिं खोजा।

भवानी मायाजाल हटाले।। मैया.।।

ढूढ़त–ढूढ़त हार गया हूं, मन के द्वारे आय खड़ा हूं।

जगत मां, एक झलक दिखला दे।। मैया.।।

(28)

अधम हम पे दया भी मां, दिखा दोगी, तो क्या होगा।

अगर अपना चरण सेवक, बना लोगी, तो क्या होगा।। अधम.।।

अंधेरे में पड़ा हूं मैं, किरण की पुंज मां तुम हो।

किरण दे के तू इसको भी, मिटा दोगी तो क्या होगा।।

दुराचारी हूं मैं जग में, दयामयी तू कहाती हो।

महत्ता अपने नामों की, बचा लोगी, तो क्या होगा।। अधम.।।

ना जानूं योग, जप, तप, ध्यान, पूजा किसको कहते हैं।

कृपा कर दास को, भक्ति सिखा दोगी, तो क्या होगा।। अधम.।।

(29)

मैं तो हर पल तुझको पुकारा करूं।

ऐसा वरदान दो, हे भवानी मुझे कष्ट चाहे सहूं।। मैं.।।

जब से ही इस जहां में पैदा लिया,

पाप–ही–पाप तबसे तो मैंने किया।

सुख पाके इसे भी मैं भूल गया, तेरी पूजा करूं।। मैं.।।

सर से अब सुख की कलिया हमारे हटे।

और दुःख के थपेड़े में जीवन कटे।

कुछ नहीं दिखता, तो परेशान हूं, क्या करूं ना करूं।। मैं.।।

नाम तेरा सहारा मुझे अब मिला।

मन को जिसने दिया क्षण में शांति दिला।

यह नाम कभी, भी भुलाये नहीं, यही बिनती करूं।। मैं.।।

(30)

भजन कर मां का तू वन्दे, ये नर तन छूट जायेगा।।

यहां के सब सगे साथी भुला देंगे तुझे उस दिन।

चलोगे जब प्रभु के घर जहां को छोड़ के जिस दिन।

जपो अब नाम मां का तुम, वही एक साथ जायेगा।। भजन।।

न जाने किस घड़ी तेरे यहां यमदूत आयेगाा।

उसी दम छोड़ के सब कुछ तू खाली हाथ जायेगा।

भजन मां का वहां केवल, तेरा सब कुछ बनायेगा।। भजन।।

भजन करके ही कोई भी जहां में शांति पायेगा।

सभी सुख प्राप्त कर जग में प्रभु घर लौट जायेगाा।

जगा ले भक्ति अंदर में, वही उनसे मिलायेगा।। भजन।।

(31)

मां भवानी को तू नहीं जाना रे,

रहा दुनिया में हरदम दीवाना रे।।

काम, क्रोध, मद, लोभ में, जीवन दिया गंवाय।

लिया न मां के नाम को, प्रेम से ध्यान लगाय।

पूजा पाठ को तू नहीं जाना रे।। रहा.।।

मान और ऐश्वर्य में, खुद को दिया भुलाय।

जीवन रुपी नाव को, तुमने दिया डुबाय।

कभी सोचा न इसको बचाना रे।। रहा.।।

जो करना है जल्द कर, समय बीतता जाय।

फिर मौका चुक जायेगा, कल की कौन बताय।

व्यर्थ में अब न इसको गंवाना रे।। रहा.।।

भक्ति भाव से विनय कर, मां का ध्यान लगाय।

मां मिलती है भजन से, सबने है यह गाय।

जीव का लक्ष्य ही ब्रह्म पाना रे।। रहा.।।

(32)

जीवन नैया को सौंप दिया पतवार तुम्हारे हाथों में।

भव पार करो ना करो पार, यह भार तुम्हारे हाथों में।।

हम तुझको ध्यायें कभी नहीं, फिर भी तुम त्यागी हमें नहीं।

अपकार हमारे हाथों में, उपकार तुम्हारे हाथों में।। जीवन.।।

तुझमें मुझमें संबंध यही, तू मां है मैं बेटा तेरा।

पर मैं संसार के हाथों में, संसार तुम्हारे हाथों में।। जीवन.।।

हैं जनम–जनम के हम पापी, जो पुण्य को जाना कभी नहीं।

अपनी भक्ति दे पाप हरो, ये भार तुम्हारे हाथों में।। जीवन.।।

यह दास कह रहा तुझसे मां, है डूब रही नैया मेरी।

क्यूं डूब रही यह जब है मां, पतवार तुम्हारे हाथों में।। जीवन.।।

(33)

भवानी को हरदम पुकारा करेंगे।

चरण उनके निशदिन निहारा करेंगे।।

वो ठुकराये तो भी न छोड़ेंगे उनकों।

हृदय में ही उनको छुपाया करेंगे।। चरण.।।

भटकते रहेंगे उन्हीं के विरह में।

उसी में ये जीवन गुजारा करेंगे।। चरण.।।

मिलेगी जो भक्तन की जूठी प्रसादी।

उसी से क्षुधा को मिटाया करेंगे।। चरण.।।

कहे दास फिर भी मिले न अगर मां।

तो फिर जन्म लेकर बुलाया करेंगे।। चरण.।।

(34)

यही अर्ज मैया है तुझसे हमारी।

शरण में ले या मौत दे दो हमारी।। यही.।।

मगर भक्ति होती कृपा पाने लायक।

तो फिर क्यूं भरमता डगर पे तुम्हारी।। यही.।।

शरण ना लो तो ऐसा पापी बना दो।

कि पुनरागमन हो जहां में तुम्हारी।। यही.।।

कहे लोग जो मां को प्रेम से गायें।

उसी पे कृपा हो भवानी तुम्हारी।। यही.।।

(35)

अगर मां को मेरी बिनती कभी, स्वीकार हो जाये।

तो फिर नैया मेरी मझधार से, उस पार हो जाये।।

मुझे फुर्सत नहीं मिलती, हूं माया जाल में जकड़ा।

तुम्हारा नाम लूं न लूं, है चलता दिल में ये झगड़ा।।

अगर तेरी कृपा हो तो ये झगड़ा, दूर हो जाये।। तो फिर.।।

हूं अधमों से भी बढ़कर मैं, कभी पूजा भी ना जाना।

नहीं चाहा कभी भी मैं, तुम्हारे द्वार पे आना।

परन्तु अब मुझे भी दे ये वर, तुझ में ही खो जाये।।

करें हरदम तेरी भक्ति, विनय ऐसी कृपा कीजै।

जगत के पापियों की मां, यही एक अर्ज सुन लीजै।।

चरण सेवक बना ले, इसलिए है दास यह गाये।। तो फिर.।।

(36)

हे मां मैं तुझे ढूढ़ने जाऊँ कहां–कहां।। हे मां।।

अपने दुःखों के गान सुनाऊँ कहां–कहां।

तेरे भजन में भक्ति में तेरे ध्यान में मगन।

रहता हमेशा मन तो घुमाऊँ कहां–कहां।। हे मां।।

तेरे चरण के ध्यान में खुद ध्यान बन गया।

अब ध्यान बनके ध्यान लगाऊँ कहां–कहां।। हे मां।।

जगदम्ब तेरे ध्यान में हम बन गये यति।

अपनी गति मैं जग को सुनाऊँ कहां–कहां।। हे मां।।

तेरे विरह में आंसू बहाते मेरे नयन।

मैं दास और आंसू बहाऊँ कहां–कहां।। हे मां।।

(37)

दयाकर मां तूं जगदम्बे, तुम्हारा दास आया है।

जगत से तोड़कर नाता, तुम्हारे पास आया है।।

करे सेवा तेरी सब विधि, रहे तेरी हुजूरी में।

बसाये रुप मन मंदिर, दरश की आस लाया है।।

ना जाने योग तप बिनती, ना तेरी ध्यान ही जाने।

बखानत नाम की महिमा, उसी को साथ लाया है।।

है कहता कोई जगदम्बा, भवानी, कालिका, तारा।

गाय़त्री जानकर तुझ में ही मैंने गेह पाया है।।

नहीं परवाह सुख दुःख की तुम्हारे नाम के साये।

जगत का दूर दुःख होवे, अरज 'देवेन्द्र' लाया है।

श्री महामाया वन्दना

(38)

दरश दे मां महामाया, तुम्हारे द्वार आया हूं।

ना करना देर जगदम्बा, बहुत जग का सताया हूं।।

बहुत ही देर से आया, भवानी नाम को सुनके।

थका चलते बहुत ज्यादा, अनेकों युग बिताया हूं।।

ना गणना हो सके इसका, जहां में आने–जाने का।

चौरासी लक्ष में बंधकर, बहुत ही कष्ट पाया हूं।।

भ्रम में ही रहा अब तक यहां की मोहमाया में।

लुभाकर काम क्रोधादिक से जीवन को जलाया हूं।।

बचा इन घोर दुष्टों से, यही है कामना मेरी।

चरण में प्रीति दृढ़ होवे, शरण 'देवेन्द्र' आया हूं।।

(39)

द्वार खड़ा हूं मां महामाया, बिनती मेरी सुन लीजै।

जगत पड़ा है घोर कष्ट में, इसको कुछ राहत दीजै।। द्वार।।

होते दीन दिनोंदिन दूना, मिलता न कुछ खाने को।

तड़प–तड़प कर रोते बच्चे तरस रहे हैं दाने को।

नन्हें भोले इन शिशुओं पे, ममता आज दिखा दीजै।
ठिठुर रहा सर्दी से मानव, वस्त्र नहीं तन ढकने को।
फटी पुरानी पहने वाला, लाज ढके मन रखने को।
पर ढ़क पाती तन को भी न, लाज जाति की रख लीजै।। द्वार।।
भाई–भाई का खून बहाता, धन के लालच में पड़के।
ईर्ष्या द्वेष बढ़ा अधिकाधिक, शून्य हुई मैत्री घटके।
जन–मानस से इस तामस का करुणामयी हरण कीजै।। द्वार।।
प्रेम बढ़ावें आपस में सब, भेद भावना हट जावे।
मिल जुल के आनंद मग्न हों, सब जन तेरे गुण गावे।
अर्ज यही 'देवेन्द्र' करे मां दर्ज भवानी कर लीजै।। द्वार।।

(40)

तेरे दरबार में मैया, भिखारी बन के आया हूं।
महामाया की देवी मैं, पुजारी बनके आया हूं।।
यहां के वासनामय भोग, ना भावे मुझे थोड़ा।
गिराये खाई में जाकर, अनेकों जन्म पाया हूं।।
लगे देखने में ही सुन्दर, नहीं कुछ सार है इनमें।
बना कागज के फूलों सा, गंध गुण हीन पाया हूं।।
है नर तन हाड़ का ढ़ांचा, लपेटे मांस शोणित को।
लुभाये चाम से मन को, वृथा ही दिल लगाया हूं।
हूं बालक मैं तुम्हारा ही, भले भूला रहा अब तक।
ना अब 'देवेन्द्र' को भरमा, बहुत जीवन गंवाया हूं।।

(41)

दर्शन देना मां महामाया, हम बालक दरबार खड़े।
जन्म–जन्म से पाप ग्रसित हैं, मूढ़ हृदय अज्ञान भरे।।
जग के झूठे तन–जन दौलत अंत ना कोऊ संग भरे।
हुए कष्ट, भय शोक घनेरे, फिर भी ना मन चेत करे।।
युग बीते इस जग में भरमत, जीव, जन्तु, तरु, पुष्प नरे।
छूटत प्राण तजे सब तन भी, जले, गले या कीट फरे।।

काम क्रोध, मद लोभादिक सब, घेरे चहुं दिस पास खड़े।
दीन–हीन हो शरण पुकारे, भवसागर किस भांति तरे।।
अधम उधारिणि, तू जग–तारिणि, जगदम्बा क्यूं देर करे।
चरण–कमल में प्रीति बढ़े नित, अर्ज यही 'देवेन्द्र' करे।।

(42)

हूं मूढ़, महा अज्ञानी मां, कैसे मैं तेरा ध्यान धरुं।
मन भटक रहा है विषयों में किस भांति तुझे पहचान सकूं।।
तुम हो जगमातु महामाया, अगणित त्रिभुवन राजे तुझमें।
हूं क्षुद्र जीव इस जगती का, अपने को भी ना जान सकूं।।
लीला से ही रचती जग को, करती हो पालन संहारण।
मैं काल चक में भटक रहा, किस विधि भवसागर पार करूं।।
कण– कण में व्यापित है महिमा, हर तिनके में सत्ता तेरी।
थाके सहसानन गुण जाके, इक मुख से कैसे गान करूं।
तपते हैं भानुचंद्र तुझसे, सचराचर को रचनेवाली।
'देवेन्द्र' कृपा करना मैया, जन–जन में तेरा भान करूं।।

(43)

जपो मन जगदम्बा का नाम।
मिलेगा तुझको मां का धाम।।
काली, दुर्गा, चण्डी, तारा, हैं असंख्य तेरो अवतारा।
मिले मुक्ति जो जपे, महामाया को सुबहो शाम।। जपो.।।
जल, थल, नभ में तेरी, छाया, जनम मरण सब तेरी माया।
लख चौरासी में भरमें, यह जीव बिना आराम।। जपो.।।
ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र उपजाई, पालन सृजन संहार कराई।
हार थके ये भी ना जाने, तेरो कोई काम।। जपो.।।
काम, क्रोध, मद ने हैं घेरा, काल लगावे अपना फेरा।
ना चाहूं कुछ और मातु मैं, चरण भक्ति से काम।। जपो.।।

(44)

पर्वतवासिनी मां महामाया, सदा करे कल्याण।

तिहारो सब करते गुणगान।।

सिंह सवारी वाली मैया, करे अभय का दान।। तिहारो.।।

तू ही चण्डी, तू ही तारा, तू ही रुप कालिका धारा।

पाते हैं जन सुख, करते जो, सदा तिहारो गान।। तिहारो.।।

तू ही उमा, रमा ब्रह्माणी, मारी महिषासुर अभिमानी।

दुर्गा रुप किया था धारण, देवों का दुख जान।। तिहारो.।।

जो भी तुझको प्रेम से गावे, परम धाम को वह जन जावे।

भक्ति हेतु आया हूं द्वारे, रखियो मेरो मान।। तिहारो.।।

(45)

जय जय हे महामाया रानी।

महिमा तेरी कोऊ न जानी, निज–निज मति सब किन्ह बखानी।। जय.।।

आये बाल वृद्ध नर नारी, द्वारे देव मनुज तन धारी।

बिन मांगे ही सब कुछ पावे, मन में है जो ठानी।। जय.।।

निर्धन हो या धनवाला, धर्मी हो या हो अघवाला।

भेद तिहारे द्वार न मैया, हो ममता की रानी।। जय.।।

जन–जन में है वास तिहारो, करना पूरण आस हमारो।

देना पावन भक्ति चरण की, हे करुणा की दानी।। जय.।।

(46)

महिमा तुम्हारी सुन आया भवानी।

द्वार खड़ा हूं जग की कल्याणी।। महिमा.।।

विनती करुं मैं तोरी हे महामाया,

दरश को तेरे मैया दूर से आया।

मैं हूं भिखारी, तू है त्रिभुवन रानी।। महिमा.।।

हाथ खड्ग सोहे, सिंह सवारी,

भगत की रक्षा खातिर, जग में पधारी।

तारी उसे भी, जो तुम्हीं से बैर ठानी।। महिमा.।।

दीखै न कोऊ इस जग में हमारा,

तेरे सिवा ना मेरा कोई सहारा।

देना चरण की भगति महारानी।। महिमा.।।

(47)

संकट–हारणि मंगल–कारणि, करियो बेड़ा पार।

शरण हम आये हैं।

आये हैं हम, आये हैं, शरण तुम्हारे आये हैं।

हे जगदम्ब मातु महामाया, देखो पलक उघार।। शरण.।।

हूं बालक मैं अज्ञानी, विनय करना भीं न जानी।

फंस कर माया बीच तुम्हें, भुला दिया हे महारानी।

करना इस माया से रक्षा, चाहूं कृपा तुम्हार।। शरण.।।

महिमा तेरी है भारी, माने इसको जग सारा।

वर्णन कौन करे उसका, सब गा–गा कर है हारा।

लीला करने को ही लेती, जग में तू अवतार।। शरण.।।

बीच भंवर में है नैया, कोऊ दीख न खेवैया।

भव सागर को पार करूं, किस विधि अब तुम बिन मैया।

पार उतारो दे चरणों की भक्ति का पतवार।। शरण.।।

(48)

महामाया खड़ा हूं द्वार पे, एक अर्ज सुन लीजै।

हूं जन्मों का महापातक, उसे मां नष्ट कर दीजै।। महा.।।

किया था प्रण जहां में जा, भजन में मन लगाऊंगा।

फंसा माया में प्रण भूला, मुझे कुछ चेतना दीजै।। महा.।।

है बीता खेल में बचपन, संग नारी युवा बीता।

हूं पछताया बुढ़ापा में, खड़ा हो हाथ हम मीजै।। महा.।।

सुना हूं द्वार पे आके, कोई खाली नहीं जाता।

कृपा कर मां हमारे पे, चरण की भक्ति ही दीजै।। महा.।।

श्री महामाया जी की आरती

(49)

जै महामाया रानी, हे मैया महामाया रानी।

आदि शक्ति जगदम्बा, त्रिभुवन कल्याणी।। जै.।।

सिंह पीठ असवारी, अष्टभुजा धारी।

अस्त्र–शस्त्र से शोभित, भक्तन सुखकारी।। जै.।।

सिर पे मुकुट सुहाये, रक्ताम्बर धारी।

अंग विविध आभूषण, मुण्डमाला धारी।। जै.।।

महिषासुर संहारी, देवन दुःख हारी।

पूर्ण होय सब इच्छा, पूजत नर–नारी।। जै.।।

पर्वत शिखर विराजे, संग गंग धारी।

कमलापति तंह राजे अमर पुरी सारी।। जै.।।

कनक थाल में जगमग, घी की ज्याति जरे।

अगर, कपूर, सुवासित, भक्तन आरति करे।। जै.।।

पंडित वेद सुनाये, शंख मृदंग बजे।

घंटा ताल बजावत, सुर नर अम्ब भजे।। जै.।।

चंदन चरण चढ़ा जो, नारियल भेंट करे।

रहे न बाको विपदा, मन 'देवेन्द्र' धरे।। जै.।।

श्री नर्मदा वन्दना

(50)

करते हैं सूर, ब्रह्मादिक सब नर्मदा तुम्हारी सेवा।

मैं करूं चरण वन्दना तेरा, शिव सुता मातु हे रेवा।।

हे आदि शक्ति मां रेवा।।

है धन्य अमरकण्टक पर्वत, जंह वास करे तू हरदम।

दर्शन से ही मिट जाय कष्ट, हो शातिं लाभ छूटे गम।

भवसागर पार उतर जावे, कुछ दिये बिना ही खेवा।।

हे आदि शक्ति मां रेवा।।

जहं बसते हैं ऋषि मुनि अनेक, कुछ प्रकट गुप्त कुछ रहते।

जाने जग को ही ब्रह्म रुप, आनन्द सुधा में बहते।

हो मस्त भजन करते हरि का, मुख से बोले हर रेवा।।

हे आदि शक्ति मां रेवा।।

कुछ जपते गायत्री, दुर्गा, कुछ राम और नन्दलाला।

कुछ जपते हर–हर महादेव, कुछ प्रणवाक्षर की माला।

कुछ जाने हरि से बड़ा भक्त, करते संतों की सेवा।।

हे आदि शक्ति मां रेवा।।

है वन औषधि से भरी पूरी, जहं सदा बसन्त सुहाना।

तरु की हरियाली देख–देख, मन नाच उठे दीवाना।

आने को ललचाते रहते, जहं देवलोक तज देवा।।

हे आदि शक्ति मां रेवा।।

कलकल करती बहती धारा, जो प्रणव मंत्र सिखलाती।

जो भी आ जाये पास उसे, यह मुक्ति मार्ग दिखलाती।

उत्तर में बहती भागिरथी, तू मध्य तारिणी रेवा।।

हे आदि शक्ति मां रेवा।।

है त्रिविध ताप हरने वाला, गंगालज से भी बढ़कर।

पत्थर भी हो जाये शिवमय, पड़ता अमृत जल जिस पर।

करते हैं उसमें वास सदा, चंद्रिका संग महादेवा।।

हे आदि शक्ति मां रेवा।।

उद्गम से लेकर सागर तक, कई कोटि तीर्थ है तट पर।

गिनती कर सकता कौन इसे, खुद हार गये जब शंकर।

देते हैं अपना धाम, शंभु, करता जो इनकी सेवा।।

हे आदि शक्ति मां रेवा।।

जो करे भक्ति से परिक्रमा, हे आदि शक्ति मां तेरी।

मनसा पूरण होवे उसकी, दुःख दूर होय बिन देरी।

दूजै को देना ऋद्धि–सिद्धि 'देवेन्द्र' लिए पद–सेवा।।

हे आदि शक्ति मां रेवा।।

(51)

बिनती किस विधि मां करुं तोर।।

शिव सुता घिरा अज्ञान घोर।

ना ज्ञान, विजय, हिय भक्ति जोर।। विनती।।

जगत वन्य है रेवा रानी, वेद विदित नर्मदा भवानी।

कर दे हिय से तम दूर मोर।। विनती।।

सृष्टि लोप ब्रह्महिं जब होवे, प्रलय मांहि भी तुम न सोवे।

करती रहती तप रुद्र घोर।। विनती।।

देती अभय मृकण्डु पुत्र को, शिव अखंड आयु दी जिसको।

देखे तुझ साये जगत भोर।। विनती।।

दिव्य ज्ञान जग को तुम देती, निज भक्तों को दुख हर लेती।

देवेन्द्र की अब ले थाम डोर।। विनती।।

(52)

है अज्ञान भरा मन मेरा, कैसे विनय सुनाऊँ।

हे जगदम्ब भवानी रेवा, बार–बार सिर नाऊँ।

तू ही जग की पालनहारी, तू ही जगत रचैया।

तू ही करे संहार जगत का, क्षणहि नर्मदा मैया।

ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र सब तू ही, प्रणव तुम्हीं में पाऊँ।। है.।।

तुम ही सत्–चित–आनन्द दाता वेद पुराण बखाने।

निराकार साकार तुम्हीं हो, मर्मी जन यह जाने।

लीला को ही करती धारण, रूप राम, हरि, दाऊँ।। है.।।

बैठे शम्भु समाधि लगाके, मार त्रिपुर अज्ञानी।

गिरा पसीना वसुन्धरा पर, प्रगटी जग कल्याणी।

ले आशीष पिता से पावन, नाश कबहुं ना पाऊँ।। है.।।

नाम अनंत भवानी तेरो, लोग धरा पर गाये।

पाते हैं शिव लोक नीच भी जो नित तुझको ध्याये।

मांगत है 'देवेन्द्र' तुम्हारी चरण–भक्ति पा जाऊँ।। है.।।

(53)

मैया कर दे मेरा भी बेड़ा पार,

शरण हम आये हैं तेरी।

अब ना छोड़ो मां थामों पतवार,

शरण हम आये हैं तेरी।।

पर्वतवासिनी रेवा मैया, पार उतारो हमरी नैया।

बसती अमरकंटक पहाड़।। शरण.।।

शीतल धारा बहती तेरी, हरती कष्ट करे न देरी।

जो भी कर ले दरश एक बार ।। शरण.।।

पाहन को भी रुद्र बनाये, जापे अमृत जल पड़ जाये।

नर्मदेश्वर को होवे अवतार ।। शरण.।।

मोक्षदायिनी रेवा माई, शंकर से ऐसो वर पाई।

देना मैया 'देवेन्द्र' को भी प्यार ।। शरण.।।

(54)

जग मातु नर्मदा रानी।

महिमा बड़ी निराली तेरी, शंकर सुता भवानी।। जग.।।

संकट नाशिनि, पाप विनाशिनि सब विधि जग हितकारी।

भव भय हारिणि, त्रिभुवन तारिणी, भक्तन को सुखकारी।

कलिमल दहन, हरण तिहुं तापर, अमर कंठ महारानी।। जग.।।

दत्तात्रय, कपिल, भृगु, शौनक, ऋषि मृकण्डु सुत ज्ञानी।

कर्दम, पिप्पलाद, नारद ऋषि, मुनि वशिष्ठ विज्ञानी।

सनत्कुमार, अत्रि, कश्यप मुनि, सेवित सुषमा खानी।। जग.।।

वरुण, कुबेर, इन्द्र, यम आदिक, देव, चन्द्र, रवि सारे।

महिमा गान करे सहसानन, तुम सबके रखवारे।

करती अभय प्रदान इन्हें, रखती सबको मनमानी।। जग.।।

शंकर अंग विन्दु से प्रगटी, आदिशक्ति महारानी।

दी त्रिदेव को निज अंशन ते, उमा, रमा ब्रह्माणी।

हो 'देवेन्द्र' दूर जग के दुःख, चाहूं वर वरदानी।। जग.।।

(55)

ॐ जै रेवा रानी, हे मैया जै रेवा रानी।

सुर नर मुनिगण ध्यावत, जोड़ि युगल पाणि।। ॐ जै।।

मगर पीठ असवारी, भक्तन भय हारी।

दूर अविद्याकारी, अष्ट भुजा धारी।। ॐ जै।।

शिव पे छत्र सुहाये, आयुध भुज सारी।

कानन कुण्डल राजे, उरमाला धारी।। ऊँ जै।।

शंकर सुता भवानी, शोभा गुण खानी।

आगम निगम बखानी, नाश न तू जानी।। ऊँ जै।।

अमरकंठक में प्रगटी, कलकल तुम बहती।

जो भी दर्शन करते, क्षणहिं पाप हरती।। ऊँ जै।।

जल तेरो अति पावन, बसते शिव जिसमें।

शिवपुर को वह जावे, मज्जहिं जो इसमें।। ऊँ जै।।

दोऊ तट शोभें हरि–हर, अगणित तीर्थ बसे।

जा दर्शन से नर के, ब्रह्म हत्यादि नशे।। ऊँ जै।।

स्वर्णथाल मणि निर्मित, घी की ज्योति जरे।

घंटा, शंख बजावत, सुर नर आरती करे।। ऊँ जै।।

श्रीफल भेंट चढ़ा जो, मैया को ध्यावे।

'देव–इन्द्र' बिन मांगे मनवांछित पावे।। ऊँ जै।।

श्री रानी सती वन्दना

(56)

हे मां सती रानी तू हम पे, एक बार कृपा का दान करो।

हूं द्वार खड़ा कबसे तेरे, मेरी ओर भी थोड़ा ध्यान करो।।

तेरा ध्यान धरे जो भी जग में, दुःख संकट उससे दूर हरे।

तेरी पूजा करने वालों पे, तेरे बलशाली हस्त हरे।

अपने सेवक की खातिर मां, तू अपनी भक्ति प्रदान करो।। हे.।।

जर पापी तुझको भजते हैं, उनको भी शरण लगाती हो।

गर भटक रहा है कोई तो, उसको भी राह दिखाती हो।

हम भी मां शरण पड़े कब से, मेरे कष्ट को कोई निदान करो।। हे.।।

हो करुणामयी तू कहलाती, सब दीनों पर करुणा करके।

ममतामयी तू बन पाई हो, मां सबको गले लगा करके।

हो दीन पुकारे भक्त सभी, इनका भी कुछ कल्याण करो।। हे.।।

(57)

जै राणी सती जै मेरी मां।

छोड़ चरण मैं जाऊँ कहां......।। जै.।।

हे जग जननी भाग्य विधाता, जग के पालन हारी।

जनम–मरण सब तुम्हरे बस है, हे जन संकट हारी।

जो तुमको तज और को ध्याये, उसको शरण कहां ।। जै.।।

तू ही आदि शक्ति हो मां, हर विष्णु अज उपजाई।

लीला का काई पार न पाये हारे कर निपुणाई।

स्वंय ब्रह्म जब जान न पाये, फिर क्या जाने जहां ।। जै.।।

भक्तों की रक्षा की खातिर, तू भूलोक पधारी।

दुष्टों से रिक्त मही को कर, फिर निज लोक सिधारी।

कष्ट निवारण हेतु सभी, मां आये तेरे यहां ।। जै.।।

(58)

दया करो हम पे सती रानी, जगत की जननी कहाने वाली।

तुम्हीं सरस्वती उमा भवानी, तुम्हीं हो तारा हे महाकाली।। दया.।।

तुम्हीं ने महिषासुर संहारा, देवों को दानव–भय से उबारा।

जगत से संकट हटाने वाली, ओ सुख का सागर लुटाने वाली।। दया.।।

चण्ड–मुण्ड को तुम्हीं ने मारा, रक्तबीज को तूने संहारा।

हे दुष्टों को मिटाने वाली, हे भक्त को सुख दिलाने वाली।। दया.।।

सहस्त्रबाहु से राम हारे, तू ने पहुंचकर उसे संहारे।

बन के महाकाली मेरी माता, तुम्हीं हो सृष्टि बचाने वाली।। दया.।।

जब भी किसी ने तुम्हें पुकारा, तूने दिया झट उसे सहारा।

होके अधम भी शरण में आया, तू अब सम्हालो हे सिंहवाली।। दया.।।

(59)

तेरे भजन से मिलता है ज्ञान।

मिटता है मन से तम का निशान।।

मां बड़ी दानी है मेरी रानी सती।

सारे जग की भवानी है मेरी रानी सती।।

नाम जपे जो तेरा, दुःख चिन्ता न उसको सताये।

विष्णु प्रिया उसी घर जा अपना निवास बनाये।

जीवन हो, शांतिमय, सुख की तू रानी है।। मेरी.।।

झूंझनू नगर में, मां आके हुई हो अवस्थित।

पूजते हैं निश दिन, लाखों नर नारी होके उपस्थित।।

दर्शन से, मोक्ष मिले, तू उसकी दानी है।। मेरी.।।

ना दिखे जहां में, तुझसा दानी, कहीं भी न पाऊँ।

फिर कहो, तो हे मां, दूजे किसके दुआरे मैं जाऊँ।

आया हूं शरण तेरी, इसे न भुलानी है।। मरी.।।

(60)

किया न मां की भक्ति जिसने वो नर कैसा?

हुई जहां न पूजा उनकी वो घर कैसा??

जो गीत व्यर्थ सिनेमा को रोज गान करें।

न किया गान भजन मां का वो नर कैसा?? किया.।।

जगत के लोग तो थोड़े में ही खुश होते हैं।

अगर न खुश हों सती मां तो फिर भजन कैसा?? किया.।।

स्वार्थ के लिए तो, सबके यहां झुकता रहा।

न झुके द्वार मां के, आके फिर वो सर कैसा?? किया.।।

करे भले ही कोई धर्म यहां आके तू।

मिल न मां की शरण, फिर कहो धरम कैसा?? किया.।।

(61)

सती मां सुन ले मेरी पुकार।

माता कभी कुमाता न होती, पुत्र कुपुत्र हजार।। सती.।।

नहीं जानता फिर भी मैया, स्तुति करूं तुम्हार।

अपराधी हूं मातु तुम्हारा, क्षमो तू भूल हमार।। सती.।।

आदि, अंत ओ मध्यहीन तू, यह गाये संसार।

अज्ञानी बालक की मैया, दीजै दोष बिसार।। सती.।।

ठौर नहीं अब कोई मेरा, सबसे हुआ बिगाड़।

शरण में आया हूं जगदम्बा, चाहूं भक्ति तुम्हार।। सती.।।

(62)

हे रानी सती द्वार तुम्हारे आया, विनती को मेरी सुनो।
जनम–जनम का मैं हू पापी, पाप को मेरी क्षमो।
तू जननी मैं बालक तेरा, भूल न मेरी गिनो।। हे.।।
सत्य से मेरा साथ हुआ ना, झूठ में जीवन गयो।
भूल हुई है अब मालूम जब संग न कुछ रह्यो।। हे.।।
बाल समय को खेल गंवायो, युवा में मस्त रह्यो।
वृद्ध भयो फिर कुछ ना सूझे, तन भी छूट गयो।। हे.।।
अंत समय कुछ काम न आये वृथा ही सोच परो।
पावन भक्ति चरण की देकर मनसा पूर्ण करो ।। हे.।।

(63)

सती माता के भजन गाओ प्यारे,
सारे जग सारी दुनिया से न्यारे।
जो भी गाता है सुख पाता है।। सती.।।
इनके भजनों की महिमा, गाये तो गाई न जाये।
जप, योग, ध्यान से बढ़कर, इनके कीर्तन कहलाये।
ऐसा कीर्तन का प्रताप, धोये पापियों के पाप।
गाये जीव परम पद पाता है।। सती.।।
लोहे को सोना करदे पारस ऐसा होता है।
इनकी भक्ति से ही जन, इनके जैसा होता है।
इनकी महिमा महान, डाले मुर्दे में जान।
है धन्य इन्हें जो गाता है।। सती.।।
भजनों के द्वारा ही हम, मां को खुश कर सकते हैं।
गर दया दृष्टि हो उनकी, फिर क्या नहीं कर सकते हैं।
दे दे भक्ति का दान, करे भक्त यही गान।
हर पल तुझको ही ध्याता है।। सती.।।

(64)

भजते निशदिन तुझको मानव, दानव ओ भगवान।

गीता गाये, भारत गाये, ओ गाये पुराण।

करले माता का ध्यान, जग में माता है महान।

राह भटकते राहगीर का माता राह दिखाये।

नैया जिसकी डूब रही हो तू ही पार लगाये।

फिर क्यों ना हम करें नित्य तेरी लीला को गान।। गीता गाये.।।

मस्तक ऊपर छत्र सुहाये, नथिया नाक सुहाये।

गले में माला, भाला कर में लगाये।

सिंह सवारी कर दुष्टों को, सुला दिया मैदान।। गीता गाये.।।

जब–जब आता संकट जन पे तू धरती पर आती।

दुर्गा काली चण्डी बन मां संकट दूर भगाती।

कलि में रानी सती रुप में करती जन कल्याण।। गीता गाये.।।

नगर झूंझनू में है मैया तेरी मंदिर भारी।

तू ही ब्रह्मा, महादेव ओ चक्र सुदर्शन धारी।

अगर भूल हो कभी दास से देना ना तू ध्यान।। गीता गाये.।।

(65)

महारानी ब्रह्माणी, भव पार करो सती रानी।

विनय करें कर जोड़ के सारे, बहे नयन से पानी रे पानी।। महा.।।

दुनिया तेरे यश को गाये जै जै कार मनावे।

तेरे दरश को तरसे नैना दे दे दर्शन दानी रे दानी।। महा.।।

दानव दल ने किया उपद्रव जब देवों पर भारी।

महिषासुर को मार गिराया, बनकर दुर्गा रानी रे रानी।। महा.।।

चण्ड मुण्ड को नाश करन को रुप धरी महाकाली।

पापों को भी नष्ट करो मां बनकर तू कल्याणी।। महा.।।

भक्ति भाव से जो कोई ध्याये मन वांछित फल पाये।

हम भी तेरे द्वार खड़े हैं, कर दे दया भवानी रे भवानी।। महा.।।

(66)

तेरा नाम सती कहलाये।

जो भी तेरी शरण में आये मन की मुरादें पाये।। तोरा.।।

द्वार तिहारे जो भी आये मन वांछित फल पाये।

जो भी ध्यान धरे मां तेरा, दुःख में न फंसने पाये।

सुख तो उसका साथ न छोड़े, जीवन यूं कट जाये।। तोरा.।।

पापी हो या होय पुजारी, जो भी तुझको ध्याये।

तेरी दया सभी पर होवे जो भी तुझको गाये।

जब भी भीड़ पड़ी भक्तों पर दौड़ तुरंत मां आये।। तोरा.।।

रानी सती तू ही हो माता, तू दुर्गे कहलाये।

तू ही काली खप्पर वाली, सब मिलकर यह गाये।

भवसागर में आज फंसी मां, नाव न डुबने पाये ।। तोरा.।।

श्री मातृ वन्दना

(67)

हंसती हो तुम तो हंसे संसार,

रोती हो तो लूट जाये बहार।

बड़ी भोली भाली हो कुसुमे मैया,

सारे जग से निराली हो कुसुमे मैया।

चन्द्र से भी बढ़कर, अति सुन्दर लगे छवि तेरी।

नैन में बसा लूं, यही रहती सदा इच्छा मेरी।।

जगदम्बा की रुपांतू, तू ही महाकाली हो कुसुमे मैया।। बड़ी.।।

फूल से भी कोमल, तेरे चरणा मेरा मन मोहे।

मन करे लिटाऊँ, जिस जगह पे चरण तेरे सोहे।

करके तू जग रचना, देती हरियाली हो कुसुमे मैया।। बड़ी.।।

तू बसी हो मन में पर रहता तन दूर तुमसे।

देख दुःख जगत् का साथ रहता नहीं मैया इससे।।

इस जीवन बगिया की तू ही वनमाली हो कुसुमे मैया।। बड़ी.।।

श्री नारायण वन्दना

(68)

हरि का नाम जपो रे भाई।

पल मांही सब विघ्न विनाशे, काटे मन की काई।। हरि.।।

कौशलेश, कौशल्या–नन्दन, कमलापति रघुराई।

करुणाकर, कमलाक्ष, कृपानिधि, राधापति, यदुराई।। हरि.।।

कंसनिकन्दन, शिव–धनु–भंजन, केशव, कुंवर–कन्हाई।

गोपीपति, गोपाल, नन्दसुत, सुवन यशोदा माई।। हरि.।।

गज उद्धारक, गणिका तारक, गोवर्धन गिरिधारी।

गरुड़ध्वज, गोविन्द, गुणाकर, मोहन, मदन, मुरारी।। हरि.।।

नटवर–नागर, करुणा–सागर, रावणारि श्री धारी।

सीतापति, धनश्याम, दामोदर, चक्र सुदर्शन धारी।। हरि.।।

रमानाथ, रघुनाथ, रमापति, रघुपति, ऋषितिय–तारी।

मधुसूदन, जगदीश, जगतपति, राम चाप–शर–धारी।। हरि.।।

अरुणनयन, अच्युत, रघुनन्दन, दशरथ सुत, वनवारी।

ईश्वर, ईश, महेश सखा 'देवेन्द्र' ह्रदय ले धारी।। हरि.।।

(69)

दीखै कोई न जग में हमारा।

राधारमण, सिया के साजन, एक है आस तुम्हारा।। दीखै।।

तुम ही मातु पिता सब मेरे, तुम ही कुल परिवारा।

यह मेरा वह मेरा यह सब, है मन का अंधियारा।। दीखै।।

जल में तू ही, थल में तू ही, तू ही गगन बयारा।

जड़ चेतन सब जीव तुम्हीं में, तुझ में ही जग सारा।। दीखै।।

पालन, सृजन, प्रलय सब तुझसे, यह संतों का नारा।

तुम तज और कहां मैं जाऊँ, दे दो प्रभु सहारा।। दीखै।।

(70)

तुम्हारे द्वार पे आके, कहो क्या लौट मैं जाऊँ ?

किनारे बैठ सरिता के, कहो क्या जल न मैं पाऊँ ?? तुम्हारे।।

छुड़ाया ग्राह से गज को, पुकारा जब तुझे उसने।

न सुनते क्यूं हमारी तू, दुःखों का गीत मैं गाऊँ ?? तुम्हारे।।

सुना है नाम दुख भंजन, जगत के कष्ट हरते हो।

है माया मोह–मद घेरे, बहुत ही कष्ट मैं पाऊँ ?? तुम्हारे।।

सकल ब्रह्माण्ड के नायक, यहीं एक अर्ज मेरी है।

रहूं जब तक जहां में मैं, तुम्हारा नाम मैं गाऊँ ?? तुम्हारे।।

(71)

प्रभु तेरो नाम परम सुखदाई।

लेवत नाम हटे सब संकट, सगरि पाप कट जाई।। प्रभु।।

भरी सभा में पंचाली को, राम नाम सुधि आई।

हार गयो दुःशासन खींचत, वसनन ढेर लगाई।। प्रभु।।

गज को ग्राह धरयो जल भीतर, वर्षों युद्ध मचाई।

तुरंत छुड़ायो गज को, जब वह थक आयो शरणाई।। प्रभु।।

पकड़ अजामिल पापी को, यमराज दूत ले जाई।

नारायण का नाम लेत ही परम मुक्ति को पाई।। प्रभु।।

को करि सकय नाम का वर्णन, स्वंय ब्रह्म थकि जाई।

जपूं नाम निशिवासर, यह वर, दीजै हे रघुराई।। प्रभु।।

श्री राम वन्दना

(72)

अवध में जन्में रघुकुल राम।

बड़भागी महाराजा दशरथ सुत पायो सुखधाम।

राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न सबहिं पुरावन काम।। अवध.।।

कौशल्या के गोद सुहाये परमब्रह्म श्रीराम।

गोद सुमित्रा लखन शत्रुघ्न, कैकेयी भरत ललाम।। अवध.।।

चैत्र शुक्ल नवमी मंगल दिन नाधिक शीत ना धाम।

घर–घर अवध बधावा बाजे जान सुबह ना शाम।। अवध.।।

याचक रहा न कोई नगर में, पा नृप से धन धाम।

बिन संकोच लुटावे जननी, भूषण, वसन, तमाम।। अवध.।।

अति हर्षित 'देवेन्द्र' मेदिनी, अब भा कष्ट विराम।

परमानन्द मनावे सज्जन, असुरन भा विधि वाम।। अवध.।।

(73)

लिये चोथेपन दशरथ के घर अवतार रघुनंदन।

है भाई चार लक्ष्मण, राम, लाला भरत शत्रुघन।। लिये.।।

कोशल्या के तनय श्रीराम, कैकेयी के भरत ललाम।

सुमित्रा के हुए अहिपति, लखन और वीर शत्रुघन।। लिये.।।

अयोध्या हो रहा मंगल, करे नर नारि मिल गायन।

दरश को आये ऋषि मुनि संग, पुर–जन बन सकल सुरगण।। लिये.।।

बजाते वीणा पहुंचे देव ऋषि, करने लगे गायन।

बना कर वेष योगी का लगे, शिव मस्त हो नाचन।। लिये.।।

तरसते वेखने को रुप जिसका देवता ऋषिगण।

खेलाये गोद मां के वे जगत के जो करन कारण।। लिये.।।

(74)

हमारे राम दुल्हा बनाये जायेंगे।

राम लक्ष्मण भरत शत्रुघन।

जोड़ी मिलाये जायेंगे।। हमारे.।।

दुल्हा वेष बना चारों को।

मंडप बिठाये जायेंगे।। हमारे.।।

दुल्हन संग बिठाकर सबसे।

वेद पढ़ाये जायेंगे।। हमारे.।।

गावे गीत मनोहर सखी सब।

व्याह कराये जायेंगे।। हमारे.।।

शहनाई बाजे मिथिला में।

मंगल मनाये जायेंगे।। हमारे.।।

मार्ग शीर्ष शुक्ल पंचमी को,

उत्सव मनाये जायेंगे।। हमारे.।।

(75)

देखो दुल्हा बने हैं राम, आजु जनकपुर में।

राम लखन दशरथ के बेटा, बने स्वंय भगवान।। आजु.।।

गाधि तनय संग आये अवध से करन पूर्ण मखकाम।

मार निशिचरी क्रूर तोड़का पुनि भेज्यो निज धाम।। आजु.।।

शत योजन मारीच पठायो, मार बिना फर वाण।

शिला रुप ऋषि पत्नी तार्यो, करि चरणन रजदान।। आजु.।।

रचा स्वंयवर आदिशक्ति का, तोड़न धनुष पुरान।

तिल भर टाल सके न नृपगण, हारि थके बलवान।। आजु.।।

बिनु श्रम राम पिनाक तोड़कर, मर्दे नृपदल मान।

साजि बारात अवधपति आये, जनक बुलावा जान।। आजु.।।

देखन व्याह पधारे सुर–गण, धरि नर तन अरु नाम।

अग्रहण शुक्ल पंचमी पावन, प्रणय बंध्यो सिय राम।। आजु.।।

(76)

दर्शन दो सियाराम, अब ना देर करो।

ढूँढ़त ढूँढ़त पांव थके अब, मन मांगे विश्राम।। अब.।।

बाट निहारत अंखिया बोझिल, चैन दिवा ना शाम।

थाकी काम करत सब इन्द्री, चाहत लेन विराम।। अब.।।

तारे गणिका, गिद्ध, अजामिल, सबरी तुकाराम।

सदन कसाई, औ ऋषिपत्नी, शुद्रहुंघसीराम।। अब.।।

मीराबाई, व्याध, गज द्रुपदा पायो सुषमा धाम।

अगणित अधम पातकी तारे, पहुंचायो निजधाम।। अब.।।

नाम गरीबनवाज तुम्हारो, करे दीन का काम।

फिर 'देवेन्द्र' करे क्यूं देरी, हौं अति दीन गुलाम।। अब.।।

(77)

रे मन क्यूं ना भजे सिया राम।

इस तन का ना कोई ठिकाना, कब हो जाय बेकाम।। रे मन.।।

लख चौरासी भरमत आया, बिनु पाये विश्राम।

अब भी मौका चूक गये यदि, कबहुं ना मिले विराम।। रे मन.।।

परम कृपा से पाया नर तन, लेने को हरिनाम।

भूल गया क्या नरक यातना, गर्भ की नमक हराम।। रे मन.।।

यही द्वार है एक खुला, पाने को पावन धाम।

आँख मूंद मत, बढ़ जा आगे, बना कर विषय गुलाम।। रे मन.।।

आवागमन मिटा ले पामर, नाम की रज्जू थाम।

हैं 'देवेन्द्र' नाम अगणित, पर सुलभ अधिक सिया राम।। रे मन.।।

(78)

सब तज भजले जै सिया राम।।

हानि लाभ को जान बराबर भजन करो हरि का निष्काम।

मंत्र दूसरा द्वन्द्व बढ़ावे, सबसे अच्छा जय सियाराम।। सब तज.।।

महामंत्र यह गूढ़ जगत में, जाने विरले चतुर सुजान।

राग द्वेष तज नेह बढ़ावे, सकल जीव में एक समान ।। सब तज.।।

जपके नाम अहर्निश मन में, पावे प्रभु को पद निर्वाण।

इसी मार्ग से बढ़ के आओ, दे निर्जन से जन को ज्ञान ।। सब तज.।।

देता सुख ऐश्वर्य सकल यह, इत–उत सबहिं बनावे काम।

आ 'देवेन्द्र' शरण में गुरु के नर तन भज ले जय सिया राम ।। सब तज.।।

(79)

लोग कहते हैं दीनबन्धु तुझे, फिर क्यूं दीन की नहीं सुनते।

यदि यह नाम तेरा है सांचा, फिर क्यूं नाम लाज न रखते।।

कुछ दाने को तरसते जग में, कुछ दाने के बिना हैं मरतें

कुछ मरतें हैं सिर्फ खाने से, कुछ खाने से भी यहां डरते।।

कोई धन के बिना दुखी रहता, कोई धन से ही कष्ट हैं पाते।

किसी के भाग्य में दवा ही नहीं, कोई भर उम्र ही दवा खाते।।

कोई बच्चा के लिए याचक है, कोई बच्चों से भिखारी बनते।

कोई भी न दिखे सुखी जग में, हर कोई आह ही रहे भरते।।

यह सुख–दुख की जो अविद्या है, प्रभु तुम दूर क्यूं नहीं करते।

ना आभास ही रहे इसका, सब 'देवेन्द्र' की तरह रहते।।

(80)

करो मन कमल नयन का ध्यान।

कौशल्या सुत, दशरथ नंदन, राम भगत के प्राण।। करो.।।

श्याम वदन पीताम्बर धारी, हाथ लिये धनु बाण।

वाम भाग में सोभित सीता, करती अभय प्रदान ।। करो.।।

सिंहासन पर बैठे रघुवर, दूजा इन्द्र समान।

शोभा वरनि न जाय रूप का, को करि सके बखान ।। करो.।।

सिर पर छत्र, कान में कुण्डल, मन्द–मन्द मुस्कान।

इसी रुप में बसौ निरंतर, हिय में कृपा निधान ।। करो.।।

(81)

जापे तुम रघुवीर सहाई।

वाको कोऊ बिगाड़ सके ना, उल्टा ही दुख पाई।। जापे.।।

क्रोधित हो नृप पे दुर्वासा, कृत्या दियो बनाई।

ले कृपान कर अम्बरीष को मारन को वह धाई।। जापे.।।

देखी चक्र सुदर्शन रक्षक, भाग छुपी धर जाई।

पीछा किया सुदर्शन ऋषि का, भागे प्राण बचाई।। जापे.।।

जंह–जहं गये वहीं पीछे में चक्र–सुदर्शन पाई।

तीनों लोक घूम आयेपर, शरण कहीं ना पाई।। जापे.।।

ब्रह्मा–विष्णु–रुद्र से भी जब, पाई ना शरनाई

लौट पड़े राजा के द्वारे चरण पड़े अकुलाई।। जापे.।।

विनय करी बहु अम्बरीष, ऋषि का पीछा छुड़वाई।

भोजन करा मुनि को, आज्ञा ले, प्रसाद खुद खाई।। जापे.।।

जल पीकर ही तब तक थे नृप आपन प्राण बचाई।

हो प्रसन्न आशीष देत ऋषि, निज आश्रम को जाई।। जापे.।।

(82)

प्रभु मेरे अब जनि देर करो।

दशरथ नंदन, असुर निकंदन, बाधा सकल हरो।। प्रभु.।।

तोड़े धनुष जनकपुर जाकर, सकल नरेश डरो।

कर प्रयास सब हार गये, पर धनुना तिलहुं हरो।। प्रभु.।।

आज्ञा मान पिता का पुर तजि, वन को गमन कियो।

सुर नर मुनि की रक्षा को, महि निशिचर रिक्त कियो।। प्रभु.।।

दिया विभीषण को लंका, रावण कुल संग मरो।

शरण में रखले अपनी प्रभु, तू मूल दोष मेरो।। प्रभु.।।

(83)

रघुवर पावन नाम तिहारो।

राम, कृष्ण, माधव मधुसूदन, है बहु कोटि अपारो।। रघु.।।

तारे सबरी, गिद्ध जटायु, ऋषि पत्नी को तारो।

गणिका, व्याघ, अजामिल तारे, गज के प्राण उबारो।। रघु.।।

सदन कसाई, मीरा तर गई, विप्र सुदामा तारो।

माता सम पुतना को तारे, दूध पीयत ही मारो।। रघु.।।

जप उल्टा ही नाम वाल्मीकि, रामायण रचि डारो।

ऐसी भक्ति जगा दे अपनी, मन रम जाय हमारो।। रघु.।।

(84)

प्रभु तेरो को करि सके बड़ाई।

किससे उपमा करूं तुम्हारी, सब तेरो उपजाई।। प्रभु.।।

चन्दा अमृत वर्षाये पर खुद में दाग लगाई।

सूरज उग प्रकाश देव, पर अर्द्ध रह्यो निशिछाई।। प्रभु.।।

ब्रह्मा सृष्टि रचे पर, वे भी, जन्म–मरण को पाई।

सकल देव उनकी ही रचना, उनमें ही मिल जाई।। प्रभु.।।

भोले बाबा बड़े दयालु, हैं सब विधि निपुणाई।

पर अवधूत वेश में रहते, खुद की सुध बिसराई।। प्रभु.।।

तुझ सम एक तम्हीं 'हो रघुवर, वेदों ने है गाई।

बिनती करूं तुम्हारी स्वामी, रखियो निज शरणाई।। प्रभु.।।

(85)

जपले मनवा राम–नाम तूं, चाहे गर कल्याण,

बनाये बिगड़ी सब भगवान।

रहें सदा सेवा में उनके, पावन पुत्र हनुमान,

बनाये बिगड़ी सब भगवान।।

राम से बढ़कर नाम है उनका, पाप नशावे कोटि जन्म का।

एक बार भी लेबय गर नर, नाम जान अनजान।। बनाये.।।

पाप हुआ न जग में उतना, एक नाम में ताकत जितना।

कीमत लगा सके ना इसका, हारे खुद भगवान।। बनाये.।।

नाम की महिमा जान न जाई, सबने थक कर शीश नवाई।

मरा–मरा जप वाल्मीकि, हो गये सदृश भगवान।। बनाये.।।

(86)

खड़े हो राम मांगे नाव गंगा पार जाने को।

लिए हैं साथ में लक्ष्मण, सहित संगिनी सियाजी को।।

पिता की मानकर आज्ञा, चले सब राज तज वन में।

नगर के लोग सब व्याकुल, है व्यापित शोक जन–जन में।। खड़े।।

न लावे नाव केवट वह, खड़ा हरि से वचन पूछे।

पखारुंगा चरण पहले, चढ़ाऊँ नाव पर पीछे।। खड़े।।

बनाये नारी पत्थर को लगा के चरण रज अपना।

बने गर नाव यह नारी, तो होवे जीविका सपना।। खड़े।।

दिया आज्ञा पखारन को, चरण हंस राम केवट को।

किया जब पान चरणामृत, उतारा पार तीनों को।। खड़े।।

(87)

बसा ले मन में सीताराम।

यही है जग का चारो धाम।। बसाले.।।

क्यूं भटके दुनिया के पीछे, गोंकुल मथुरा धाम।

कहीं न भक्ति मिले जाने से, मिलता है जप नाम।। बसाले.।।

कण–कण में व्यापित हैं जग के अंदर बाहर राम।

सारा जग उनके ही अंदर, जहं देखो सियाराम।। बसाले.।।

नाम यही है एक सहारा, बिन इसके सूना संसार।

धन दौलत सब सून हरि बिन, तन मन सब बेकाम।। बसाले.।।

जपले सियाराम निशिवासर, होकर तू निष्काम।

आवागमन छुड़ाले जग से, जपकर प्यारे नाम।। बसाले.।।

श्रीराम जी की आरती

(88)

ऊँ जय दशरथ लाला।

राम कोशिला नंदन शंकर मन माला।। ऊँ।।

बाम भाग वैदेही, दांये लखन लाला।

सम्मुख विनती करते, तुअ अंजनी लाला।। ऊँ।।

सिर पे मुकूट सुहाए, उर्ध्व तिलक धारी।।

उर वनमाला राजै, चाप बाण धारी ।। ऊँ।।

वसन पीताम्बर सोहे, भूषण अंग सजे।

वदन श्याम मन मोहन, कोटिहु काम लजे ।। ऊँ।।

गौर वर्ण श्री सीता, नीलाम्बर धारी।

अभय देत त्रिभुवन को, पाणि पद्मधारी ।। ऊँ।।

राम जानकी सोहै, घन मंडल बिजली।

भगति सुधा बरसावे, हिय में जनक लली ।। ऊँ।।

घंटा, ताल, दुन्दुभि, शंख मृदंग बजे।

जय जयकार मनावत, सब सियाराम भजे ।। ऊँ।।

जगमग ज्योति सजाये, आरती भक्त करे।

'देव+इन्द्र' गा मन से पाप अनंत हरे ।। ऊँ।।

(89)

आरती अवध बिहारी की।

सियावर ऋषि तिय तारीकी।

मेघ सम वदन श्याम सोहे, दन्त बिजली सम मन मोहे।

मुकुट शिर मनिमय धारी की।। सियावर.।।

कमल सम नयन, भाल चंदन, करे शिव ब्रह्मादिक वन्दन।

गले वनमाला धारी की।। सियावर.।।

कांधे पर धनुष बाणधारी, वाम दिश वैदेही प्यारी।

वसन पीताम्बर धारी की।। सियावर.।।

लिए हैं छत्र वीर लक्ष्मण, चंवर लिए भरत, शत्रुसूदन।

सकल जग निज बस कारी की।। सियावर.।।

श्री कृष्ण वन्दना

(90)

व्याकुल नैना राह निहारे।

सुनों सखा अब मन के मेरो, कोऊ ना हितू हमारे।। व्याकुल।।

वसी ह्रदय वृषभानु दुलारी, रूप ना टारत टारे।

दीख पड़े ना कोई सूरत, तेहि सम लागत सारे ।। व्याकुल।।

माखन लेत रह्यो गोपिन ते, बल से डगर किनारे।

मटुकी छोड़ गई मेरे पंह, हिय ले गई हमारे ।। व्याकुल।।

होत प्रभात निहारु डगरी, रैन गिनूं नभ तारे।

युग सम लगे दिवस अब मोको, कब हो दरश दुवारे ।। व्याकुल।।

देख विकल अति मनमोहन को, श्यामा कीन्हि इशारे।

मिले कृष्ण 'देवेन्द्र' प्रिया से, लोभी धनहिं अपारे ।। व्याकुल।।

(91)

राधे आजा यमुरा किनार।

वंशी की धुन पर कान्हा पुकार।। राधे.।।

शरद पूनम आई मतवारी, चहुं दिश फैल रही उजियारी।

अनुपम रास रचाचन आजा, संग लिए सखि ब्रज की पनार।। राधे.।।

धन ना दीख पड़े नभ माहीं, ज्ञान भये जिमि मोह नसाही।

जीव पड़े ना भव बंधन में, खुल गए तम के वज्रकिवार।। राधे.।।

पूरन करले आस पुरानी, जा इच्छा व्रत कीन्ह भवानी।

देर न कर वृषभानु दुलारी, आ जा मिलन बांह पसार।। राधे.।।

मिलन को आकुल सखियां धाई, लाज, मोह तज प्रभु पंह आई।

बुझी प्यास 'देवेन्द्र' ह्रदय की, जीव ब्रह्म भये एकाकार।। राधे.।।

(92)

आजा मोहन यमुना के तीर।

सखियां हो गई परम अधीर।। आजा.।।

राधा व्याकुल सुधि ना तन की, भई अचेतन में प्रियतम की।

रुठ गये क्यूं छलिया हमसे, नैन बहाये तापित नीर।। आजा.।।

हारी खोजत कुंज गलिन में, हो असहाय पड़ी मधुवन में।

आस न तोड़ो इन पपिहे की, आजा स्वाती बनके नीर।। आजा.।।

भ्रमर बिना बगिया है सूनीं, चन्दा आग लगाये दूनी।

किस विधि सहूं विरह की ज्वाला, कहा न जाय जिया की पीर।। आजा.।।

भूल भई हमसे वनवारी, मोह पड़ीं थी हम मतवारी।

कैसे जाने जगदीश्वर को, होती जाति गंवार अहीर।। आजा.।।

करुण पुकार सुनी मोहन जब, प्रकट भये 'देवेन्द्र' वहीं तब।

प्रेम विवश हो कृष्ण कन्हाई, जित गोपी तित भए यदुवीर।। आजा.।।

(93)

कान्हा वंशी की तान सुना जा रे, मोहे बिरह की आग सताये।

मोरी शव सम देह जगा जा रे, क्यूं प्रीत बढ़ा तड़पाये।।

श्रवण लगाय रहूं निशिवासर, दूजा स्वर ना सुनाये।

विरही पपिहा विरह जता के, घृत पावक लहकाये।।

सरगम मधुपर सुना जा रे।। मोहे.।।

एक टक रहूं निहारत डगरी, ठुमुक–ठुमुक कब आये।

ताथइ–ताथइ नाच–नाच कब माखन भोग लगाये।।

नैनन प्यास बुझा जा रे।। मोहे.।।

मन ना लागे कोऊ काम में, रहूं झूठ बहलाये।

कुटुम्ब कबीला बैरी लागे, विष सम सुधा लखाये।

मिलन की आस पुरा जा रे।। मोहे.।।

कित जाऊँ कित खोजूं तुझको, मन उद्वेग कराये।

कण–कण में व्यापित परमेश्वर, जान मनहिं मन ध्याये।।

'देवेन्द्र' को हृदय लगा जा रे।। मोहे.।।

(94)

नाहीं बनेगी गिरधारी, हमारी तोरी नाहीं बनेगी।

अति कठोर हिय तेरो छलिया, मैं भोली सुकुमारी।। हमारी.।।

पनघट से जल भर के गगरी, जात रही मैं अपनी डगरी।

काहे को कंकड़ मारी।। हमारी.।।

जात रही माखन दधि बेचन, रोक डगर सब खा गये माखन।

क्यूं फोरी मटूकी हमारी ।। हमारी.।।

वृन्दावन में गाय चराय, कालिन्दी तट वंशी बजाये।

छीन लियो चैन हमारी ।। हमारी.।।

(95)

प्रकट भये देवकी के घर, सुरन सब देखन आये।

करें गायन सकल गंधर्व, परि सब नाच कर गाये।। प्रकट।।

खुले बंधन सभी सोये वहां जो द्वार रक्षक थे।

उठा वसुदेव मोहन को उसी दम गोकुला लाये।। प्रकट।।

कहाये लाल यशोदा के, सुवन श्री नन्द बाबा के।

मना आनंद गोकुल में सकल नर–नारी सुख पाये।। प्रकट।।

हने राक्षस बहुत सारे, जिसे था कंस ने भेजा।

सकल ब्रजनारि के घर जा, चुरा माखन दही खाये।। प्रकट।।

चराये गाय वन में जा, रचाये रास वृन्दावन।

वधे फिर कंस ओ पापी, धरा पर पुण्य वर्षाये।। प्रकट।।

(96)

वसुदेव–देवकी जन्म दियो, कहलाये यशोमति के लाला।

मथुरा से आये गोकुल में, लीला करने वंशी वाला।। वसुदेव.।।

मारे अनेक अधमी राक्षस, गोदी में मां के खेलत ही।

ना भेद जान पाई माता, प्रभु को मानी अपना लाला।। वसुदेव.।।

सुरपति की पूजा बन्द करा, करवाई गिरिवर की पूजा।

नख पर धारण कर गोवर्धन, शचिपति का गर्व मिटा डाला।। वसुदेव.।।

थे जांच करन आये ब्रह्मा, हरि को निज माया फैलाकर।

फंस गये स्वयं निज माया में तब करी विनय चौमुख वाला।। वसुदेव.।।

है अति विचित्र हरि की लीला, हारे अहिपति बिन जाने ही।

मुझको भी दास बना लेना, है अर्ज यही हे नंदलाला।। वसुदेव.।।

(97)

हरि की लीला लखि न लखाई।

जन्म लियों मथुरा, में ब्रज में पिता दीनि पहुंचाई।। हरि.।।

मारन उन्हें पूतना आई, विषमय दुग्ध पिलाई।

उसको भी निज लोक दियो, जाको ऋषि मुनि ना पाई।। हरि.।।

माखन खायो ब्रज में घर–घर, ग्वाल वाल संग जाई।

वंशी बजा–बजा कर अपनी, सबका दिल लियो चुराई।। हरि.।।

रास रचायो ब्रजनारी संग वृन्दावन में जाई।

सुधि ना लीनि कभी फिर इनकी वापस मथुरा में जाई।। हरि.।।

दुष्टों को भी वही पद दियो जो संतों ने पाई।

मन मोहन सब दोष भुला, रखियो अपनी शरणाई।। हरि.।।

(98)

श्याम बिना कछु नीको ना लागे।

करन चहूं कुछ हो जावे कुछ, मन उनके ही पीछे भागे।। श्याम.।।

होवय ना कुछ काम काज अब, मनमोहन से प्रीतभई जब।

मन न करे रहने को घर में, धन दौलत में मन ना लागे।। श्याम.।।

दिन काहूं मैं शून्य निहारत, रात नींद ना नैनन आवत।

देखन हेतु श्याम सुन्दर को, रहे अहर्निश नैना जागे।। श्याम.।।

दीख पड़े ना राह जाऊ कंह, मन पा जाये अचल शांति जंह।

रख लो श्याम शरण में अपनी, ना भरमाओ प्रभु अब आगे।। श्याम.।।

(99)

विषधर सिर चढ़ि नाचे कन्हाई।

नाचे कन्हाई देखो नाचे कन्हाई, गावे सुर गण बाजा बजाई।। विष.।।

कालिन्दी तट खेलन आये, यमुना जल में गेंद गिराये।

काली दह में कूदे कन्हाई।। विष.।।

पहुंचे सीधे नाग द्वार पर, भया नाग कोधित हरि ऊपर।

करने लगे तेहि संग लड़ाई।। विष.।।

थका युद्ध करते जब विषधर, कूद चढे हरितेहि के फण पर।

वंशी टेर लगायो कन्हाई।। विष.।।

किया शुद्ध जल, जो था विषमय, बना नीर जमुना अमृतमय।

सुर नर मुनि जैकार मनाई।। विष.।।

(100)

सुन मात यशोदा गोरी, तेरो लालन कीनी चोरी।।

चुपके से मेरे घर भीतर, ग्वाल बाल संग आयो।

ले उतार सींके से मटूकी, हिल–मिल कर सब खायो।

बंदर को अधिक खिलायो सब, खुद खायो बहुत थोड़ी।। सुन।।

खड़ी देखती थी मैं चुपके से चोरी का खेला।

लगा दिया था मेरे घर में यह कपीश का मेला।

देख मुझे भाग पर, मटुकी मेरी फोड़ी।। सुन।।

पकड़ लिया जब मैंने तो, उल्टे ही चोर बनाया।

खुद बन गया साधु यह, श्रीदामा का नाम लगाया।

आया मेरे आंगन से है, बांह छुड़ा बरजोड़ी।। सुन।।

(101)

बड़ा नटखट भयो माई,

यशोदा तेरो कुंवर कन्हाई।

फोड़ दियो सब मटुकी हमारी,

माखन दीनि लुटाई।। यशोदा.।।

माखन खायो घर–घर जाके।

ग्वाल बाल सब बाहर झांके।

आवे न कोई लुगाई ।। यशोदा.।।

पनघट पर जा रोके डगरी।

सब सखियन की फोड़े गगरी।

हँस–हँस ताली बजाई ।। यशोदा.।।

कालिन्दी तट घूमन जाये।

चढ़ कदम्ब निज वंशी बजाये।

सबकी चीर चुराई ।। यशोदा.।।

श्री कृष्ण जी की आरती

(102)

आरति कीजै श्री मुरलीधर की।

कृष्ण कन्हाई गिरिवरधर की।। आरति.।।

देवकी नंदन, कंस निकंदन, वासुदेव, यशुमति–नंदननंदन।

कुंज बिहारी, राधावर की।। आरति.।।

मोर मुकुट सिर, कानन कुण्डल, लीला करी जाय ब्रजमंडल।

मणिन हार बन माला धर की।। आरति.।।

अंग–अंग में भूषण सोहे, मंद हास परबस मन मोहे।

भाल तिलक पीताम्बरधर की।। आरति.।।

वदन श्याम, कर वंशी धारी, अरुण ओष्ठ लट घुंघरवारी।

रसिक शिरोमणि, योगेश्वर की।। आरति.।।

वाम भाग वृषभानु दुलारी, घन मंडल बिजली उजियारी।

भक्ति वृष्टि हो श्री श्रीधर की।। आरति.।।

'देव+इन्द्र' घृत ज्योति जलाये

सुर, नर, मुनि सब आरति गाये।

प्रिया संग श्री परमेश्वर की।। आरति.।।

(103)

आरती कृष्ण मुरारी की।

संग वृषभानु दुलारी की।

चराये वृन्दावन गैया, सखा संग लिए दाऊ भैया।।

करे लीला तन धारी की।। आरती.।।

चुरा के दहि माखन खाये, दरश देने घर–घर जाये।

प्रेम के वश ब्रजनारी की।। आरती.।।

सुहाये ज्योति स्वर्ण थाली, दिखावे प्रेम मगन आली।

भुल निज सुध तन धारी की।। आरती.।।

डतारन भार धरा आये, सकल सुर, नर, मुनि गुण गाये।

युगल राधा गिरिधारी की।। आरती.।।

श्री शिव वन्दना

(104)

योगिया एक बड़ा मतवाला।

अंग–अंग में भस्म रमाये, नाग लपेटे काला।। योगिया.।।

डिमिक डिमिक डिम डमरु बजाये, जग मोहित कर डाला।

बूढ़ा बैल संग ले घूमे, लगता बड़ा निराला।। योगिया.।।

बाघम्बर कटि माहि लपेटे, गले रुद्र की माला।

झोला एक बगल लटकाये, भांग धतूरे वाला।। योगिया.।।

बहती गंग जटा से निर्मल, हरती पाप कराला।

जा मज्जहि होवे नर पावन, मानहुं बकहुं मराला।। योगिया.।।

भाल दूज का चंद्र सुहाये, करता सदा उजाला।

भूत प्रेत संग रहे अकेला, खुद का किये दिवाला।। योगिया.।।

देखत जलत जगत को विष से, उसे पान कर डाला।

भक्ति, मुक्ति देता क्षण माहीं, जपे नाम की माला।। योगिया.।।

डूब रही 'देवेन्द्र' धरा अब, मानवता तज डाला।

एक सहारा तेरा स्वामी, शंकर दीन दयाला।। योगिया.।।

(105)

व्याहन शिव शंकर जाये।

ब्रह्मा, विष्णु, सुरेश सकल सुर, संग बराती आये।। व्या.।।

गज ऐरावत इन्द्र पधारे, ब्रह्मा हंस सजाये।

वैनतेय असवार चले हरि कौटिहु काम लजाये।

सुरगण निज–निज ले असवारी, सैन्य साज संग लाये।। व्या.।।

बूढ़ा बैल सवार हुए शिव, अंग भभूति रमाये।

भाल चन्द्रमा धारण करके, गले नाग लपटाये।

भूत प्रेत सब नाचत गावत, भैरव गीत सुनाये।। व्या.।।

पहुंची जब बारात नगर में, देख सकल हर्षाये।

पड़ी नजर जब त्रिपुरारी पर, नर–नारी घबराये।

वेश भयंकर, भूत–प्रेत संग, बाल वृन्द भहराये।। व्या.।।

रुठी मैना व्याह न होवे, लौट बाराती जावे।

गिरिजा शिव परिणय न होवे, मंगल गीत न गावे।

गौरी सदा कुमारि रहे पर, शिव के संग न जाये।। व्या.।।

ब्रह्मा विविध प्रकार बुझाके गिरिजा मातु मनाये।

पार्वती शिव व्याह कराके, देवन कष्ट हटाये।

गान करे अप्सरा गगन में, सुर दुन्दुभी बजावे।। व्या.।।

हुए षडानन पैदा शिव से, तारक मार गिराये।

सुर नर मुनि का शोक मिटा के भूधरभार हटाये।

डोल रही 'देवेन्द्र' धरा अब, तुम ही पाप नसाये।। व्या.।।

(106)

हैं परम दयालु बम भोले, बिन मांगे ही सब कुछ देते।

जो नाम जपे शिवशंकर का, पल में उसको अपना लेते।। है.।।

मिलता मन को विश्राम तुरंत, इतिहास पुराण बखान करे।

जप के शिव को ही शांत भये, नारद जो ग्लानि भरे रहते।। है.।।

अपने तो रहे भिखारी ही, पर देते जग को धन दौलत।

वट नीचे रहे समाधि लगा, दूजे को महल बना देते।। है.।।

खुश रहते भंग–धतूर चबा, कुछ व्यंजन से भी काम नहीं।

ओढ़े उनसे सब विविध वसन, वे आप दिगम्बर कहलाते।। है.।।

जग के हित विष का पान किये, देवों को अमृत पिलवायें।

'देवेन्द्र' विमान चढ़े सुरगण, शिव वृषवाहन जाने जाते।। है.।।

(107)

पहने बाघम्बर शिवशंकर बसहा बैल सवारी।

अंग भभूति गले रुद्र माला, जटा में गंगाधारी।। पहने।।

भाल दूज का चंदा सोहे, नाग गले लपटाये।

सिर में तिलक त्रिपुण्ड लगाये, नीलकण्ठ मन भाये।

डिमिक डिमिक डिम डमरु बजावे, सींग बगल में धारी।। पहने।।

वाम भाग शोभित जगदम्बा, गोद गणेश खेलाये।

सम्मुख खड़े कुमार षडानन, मोर पंख सहलाये।

भूत प्रेत आनंद मनाये, नाचय दय दय ताली।। पहने।।

नंदी भृंगी दोउ गणनायक, तांडव नृत्य दिखाय।

भैरव–भैरवी तान सुनाये, गीत योगिनी गाये।

देव दनुज दोनों ही करते, पूजन शंभु तुम्हारी।। पहने।।

गिरि कैलाश उमा संग भोला, सुन्दरता को भाखे।

योगी, यती समाधि लगाके घेरि ह्दय में राखे।

बड़े भक्ति 'देवेन्द्र' चरण की, वर देना त्रिपुरारी।। पहने।।

(108)

भजन करो शिव शंकर का, हैं दानी बड़े महान।

बिन मांगे झोली भर देते, गिरिजापति भगवान।

करले भोले का ध्यान, करले भोले का ध्यान।।

मस्तक ऊपर चंद्र विराजे, गले नाग लपटाये।

अंग अंग में भस्म लगाकर, डिम डिम डमरु बजाये।

जटा मध्य से बहकर गंगा, करती जन कल्याण।। बिन.।।

पहने बाघ छाल करते हैं, बसहा बैल सवारी।

बिना वस्त्र के रहते हरदम, फिरते सदा उधारी।

धुनि रमाये बैठे रहते, जाकर किसी मसान।। बिन.।।

थोड़े में ही हो प्रसन्न, क्षण में सबकुछ दे देते।

सबका दुख अपने सिर लेकर, दुनिया को सुख देते।

पिला दिया देवों को अमृत, स्वंय किया विष पान।। बिन.।।

जपते राम नाम की माला, हरदम ध्यान लगायें।

नहीं 'भेद है राम शंभु में, सब ऐसा ही गाये।'

चरण कमल की भक्ति दे, हरना मेरा अज्ञान।। बिन.।।

(109)

भोला वास करो मेरे मन में,

माता जगदम्बा के साथ।

कर त्रिशुल गले रुद्र माला,

डमरु बजय एक हाथ।। भोला.।।

बाम भाग स्थित जगदम्बा,

गोद लिए गणनाथ ।। भोला.।।

भूत प्रेत सब नाचत गावत,

रहे निरंतर साथ ।। भोला.।।

तीन लोक के स्वामी हो तुम,

दाता भोला नाथ ।। भोला.।।

चरण भक्ति देकर मुझको भी,

कर दो प्रभु सनाथ ।। भोला.।।

(110)

सदा शिव नाम जपो रे भाई।

तेरी बिगरी सब बन जाई।। सब.।।

रावण काट–काट निज मस्तक, शिव पर जाय चढ़ाई।

युद्ध भूमि में कटत शीश, फिर नया तुरंत बन जाई।

होकर परेशान तब राघव शिव का ध्यान लगाई।। सब.।।

रावण संग मार सब निशिचर, विजय लंक पर पाई।

लंका राज विभीषण को दे, अवध लौट कर आयो।

राज पाय कांवर ले रघुवर शिव पर नीर चढ़ाये।। सब.।।

भूत प्रेत संग रह मशान में डिम–डिम डमरु बजाई।

रहते लीन भजन में हरदम खुद की सुध बिसराई।

आया द्वार तुम्हारे भोला, शरण में लेहुं लगाई।। सब.।।

(111)

हे शिव शंकर डमरु वाले, हम शरण तुम्हारे आये हैं।

है पास नहीं कुछ भी मेरे, खुद को लेकर ही आये हैं।। हे.।।

ना धर्म कर्म कुछ है मुझमें ना पूजा का है ज्ञान मुझे।

ना भक्ति भाव है फिर भी हम, दरबार तुम्हारे आये हैं।। हे.।।

हम याचक हैं तुम हो दाता, तुम ही पितु मातु, सहृद् भ्राता।

क्षणभंगुर दुनिया देख–देख, हम मन में अति घबराये हैं।। हे.।।

हैं पापी हम कितने युग से इसका है कोई लेख नहीं।

इस बार मिले भक्ति तेरी, थक द्वार तुम्हारे आये हैं।। हे.।।

(112)

शिव को भजने वाला प्राणी कभी नहीं दुख पाता है।

सारे लोक भेद कर वह, शिवलोक अंत में जाता है।।

बड़े दयालु भोले बाबा, क्षण में कष्ट मिटा देते।

जो मांगे बिन सोचे समझे, पल में है सब कुछ देते।।

अनजाने भी हर शिव कह भवसागर तर जाता है।

जो जपता है महाकाल को, नहीं सताता काल उसे।

पाता है वह विजय मृत्यु पर, कहते हैं सब अमर उसे।

शरण में आते ही जन को, मुक्ति मार्ग मिल जाता है।। सारे.।।

देव दनुज दोनों भजते हैं, नहीं तुम्हारे भेद यहां।

होते वहीं प्रकट भगवन, हो आर्त्त पुकारे भक्त जहां।

चरण भक्ति पा जाने को यह, अधम तुझे नित गाता है।। सारे.।।

(113)

शिवशंकर त्रिपुरारी, तेरे चरणों की बलिहारी।

आया द्वार तुम्हारे स्वामी, रखियो लाज हमारी।।

देवों में तुम महादेव हो, सुखकारी दुखहारी।

सब मिल करते गान तुम्हारा, सुर नर मुनि तन धारी।

करते हो सबकी रक्षा तू गिरिजापति भंडारी।। शिव.।।

त्रिपुर दैत्य था महाबली जीती उसने दुनिया सारी।

छोड़ लोक निज सकल देवता आयो शरण तुम्हारी।

दुष्ट दैत्य का वध करने से नाम पड़ा त्रिपुरारी।। शिव.।।

लीला को बनते ब्रह्मा ओ चक्रसुदर्शन धारी।

करते हो सृष्टि रक्षा ओ नाश बाघम्बरधारी।

तारे अधम अनेकों भोले अब है बारी म्हारी।। शिव.।।

(114)

ऐसी भक्ति जगा दे भोला तुझ में ही खो जाऊँ मैं।

नाम रहूं रटता मैं तेरा सबमें तुझको पाऊँ मैं। ऐसी.।।

शिवशंकर बाघम्बर धारी, गंगाधर कैलाश बिहारी।

पार्वती पति त्रिपुरारी का नाम अहर्निश गाऊँ मैं। ऐसी.।।

जल में थल में जड़ चेतन में, वास तुम्हारा है कण–कण में।

निराकार साकार तुम्हीं हो जहं जाऊँ तहं पाऊँ मैं। ऐसी.।।

तुम ही विष्णु और विधाता, हो तुम ही सबके पितु माता।

पाने को ही भक्ति तुम्हारी, चरणन शीश नवाऊँ मैं। ऐसी.।।

(115)

होऽऽ भोले बाबा तेरे गीत गाता रहूं।

तेरे चरणों का ध्यान लगाता रहूं।।

मैं लगाता रहूं।। बाबा हो भोले बाबा।।

माँगे वरदान तुझसे यहीं हम, रहें जपते तेरा नाम हरदम।

रहें तुझमें मगन, ऐसी कर दे लगन, तेरी कीर्त्तन में मन को लगाता रहूं।।

मन लगाता रहूं।। बाबा हो भोले बाबा।।

बहे गंगा जटा से तुम्हारी, हाथ डमरु ओ बैल सवारी।

तेरी महिमा महान, गाये सारा जहान, गंग धारा में मैं भी नहाता रहूं।।

मैं नहाता रहूं।। बाबा हो भोले बाबा।।

हूं तुम्हारी ही आस लगाये, फिर क्यूं भोले मुझे तू भुलाये।

मैं हूं बालक तेरा, तू ही सब कुछ मेरा, अपनी विपदा किसे मैं सुनाता रहूं।।

मैं सुनाता रहूं।। बाबा हो भोले बाबा।।

(116)

शंकर डमरुवाले, तेरे शरण में आये हैं।

दिल अपना अर्पण को, तेरे चरण में लाये हैं।। शंकर।।

आया महिमा सुनकर कितने पापी को तारे हो।

जब संकट पड़े जन पर तू क्षण में उबारे हो।

हैं घोर पातकी हम, सारे जग से सताये हैं।। दिल.।।

बादल दुःख के आकर चहुं ओर खड़े मेरे।

बाधायें आ आकर सब ओर मार्ग घेरे।

कित जाऊँ ना दीखै, मन से घबराये हैं।। दिल.।।

हे दुनिया के मालिक एक अर्ज हमारी है।

प्रभु आके बचा लेना एक आस तुम्हारी है।

अब कोई नहीं मेरा, अपने ठुकराये हैं।। दिल.।।

(117)

जपो मन शिव शंकर का नाम।

मिलेगा जपते ही आराम।। जपो.।।

नाम बड़ा प्यारा भोले का, सुख का है यह धाम।

मिली शांति थी ऋषि नारद को जपने से शिवनाम।। जपो.।।

मारकण्डेय हो गये अमर जपकर नित आठों याम।

काल बेचारा डर कर भागा, प्राण बचा निज धाम।। जपो.।।

नाम तेज से ऋषि दधीचि ने किया अस्थि पायो शिव धाम।। जपो.।।

देते हैं सबको गति भोले जो जपता है नाम।

अंत समय भी नाम रहे, प्रभु कर देना यह काम।। जपो.।।

(118)

जै हे त्रिपुरासुर नाशक, नन्दी वाहन कैलाशी।

भाल चंद्र कर त्रिशुल शोभित, सुर नर मुनि सब गुण गासी।। जै.।।

नीलकंठ तन भभूतलेपन संतन के मन हर्षासी।

कल कल जटा मध्य से जय शंकरी बहरासी।। जै.।।

पंचवक्त्र त्रिनयन शंकर भंग धतूरा नित खासी।

बाघम्बर कटि लपेट, उर में मुण्ड माला शोभा पासी।। जै.।।

डमरु बजय सदा डिम डिम डिम भूत प्रेत नाचय गासी।

जन्म मरण सब छूटत बाको जो शिव को निश दिन ध्यासी।। जै.।।

ध्यान मग्न रहते निर्जन में धुनि रमाये अविनाशी।

देना दान भक्ति चरणों की मै भी तेरो शरणासी।। जै.।।

(119)

दरश बिन नींद न आवत रात।

शिवशंकर अब ना तड़पाओ, सुन लो मेरी बात।। दरश.।।

भोजन की रुचि नाहि रही, अब सब फीका ही खात।

प्यास लगे ना नीर सुहाये, जीवन व्यर्थ बुझात।। दरश.।।

सेज लगे कांटे सम, सोबत बिना रैन काटि जात।

आवे दिवस निहारूं मूरत, सूरत पर न लखात।। दरश.।।

कित जाऊँ कहँ शिव को पाऊँ है मन यह भरमात।

देदो थोड़ी झलक चरण की नैन प्यास बुझ जात।। दरश.।।

(120)

हरदम शिवशंकर कैलाशपति को गाते रहे हैं, गाते रहेंगे।

जब तक जग में जीवन, और मरण हम पाते रहे हैं, पाते रहेंगे।। हरदम.।।

जब तक जन्मूं इस दुनिया में नाम रहूं जपता तेरा।

ऐसा कर देना तू भोले न कभी लगन छुटे मेरा ।। हरदम.।।

गर फूल बनूं तो तेरी ही पूजा में अर्पण हो जाऊँ।

गर राख बनूं जलकर जो मैं तेरे ही अंगन लग जाऊँ ।। हरदम.।।

मैं भूत प्रेत बन जाऊँ गर तो अपने गण में रख लेना।

गर मुक्ति मार्ग पा जाऊँ तो शिवपुर में ही जगह देना ।। हरदम.।।

ना चाहूं धन दौलत कुछ भी, सारे जग को यह सब देना।

मुझको तो सब निज चरणों की ही प्रेम–भक्ति का वर देना ।। हरदम.।।

(121)

विनय करें कर जोड़ भवानी, सुनलो भोले भंडारी।

बना वेष नटवर का नाच, दिखाओ हे शिव त्रिपुरारी।। विनय.।।

बोले शंकर कैसे नाचूं, चार सोच लागत भारी।

इससे किस विधि बाचू प्यारी दुख पाये दुनिया सारी।। विनय.।।

जटा मध्य से झरे गंगा फैले धरणी पर सारी।

मुख अनन्त की धारा होगी फिर न जाये सम्भारी।। विनय.।।

नाग चले फुफकार गला से भाग छिपे सब दिश चारी।

है मयूर वाहन कार्तिक का खाये वह विषधर सारी।। विनय.।।

बने बाघम्बर बाघ करे भक्षण वह मेरी असवारी।

गिरे चंद्र से सुधा जगा देगा वह मुण्डमाल म्हारी।। विनय.।।

रखने को शिव मान शिवा का सोच बचायो है चारी।

बना वेष नटवर का नाचे तांडव नृत्य बड़ा प्यारी।। विनय.।।

(122)

तुम तजि और कहां मैं जाऊँ??

हे शिवशंकर त्रिभुवन स्वामी तुझा सा कहां मैं पाऊँ।। तुम.।।

ना कोई ठाकुर तुझसा देखा, घूमा मैं बहु ठाऊँ।

चाकरि दूजै का नहिं चाहें, मन कित कित भरमाऊँ।। तुम.।।

मन चाहत बस एक तुम्हीं को, फिर किसको मैं ध्याऊँ।

माने ना यह बात हमारी, किस विधि मैं समझाऊँ।

अब न कहीं भरमाओ स्वामी, जग से अति घबराऊँ।

शरण में रखले अपनी भोले, बार–बार सिर नाऊँ।। तुम.।।

(123)

आये मैंना के दुआर, शिव दुल्हा बन के।।

सुंदर वेष बना के भोला, लिए बराती साथ।

हो सवार बसहां के ऊपर, लिए डमरुआ हाथ।

बाजे डिम डिम डमरु, लुभाये मन के।। आये.।।

आगे चले देव सेना संग, ब्रह्मा विष्णु सुरेश।

वाके पीछे भूत–प्रेत संग नन्दी पीठ महेश।

नाचे भूत प्रेत, निज तन सुध भूल के।। आये.।।

आई परिछन सखि सब दुल्हा, सुन्दर वेश बनाय।

छोड़े जब फुफकार नाग, सब डर के गई पड़ाय।

नहिं होवे यह व्याह, मैना बोली तन के।। आये.।।

कर प्रयास सब देव ऋषि, मैना को लीन मनाय।

शुभ शुभ गौरी संग दिये, भोला का व्याह कराय।

सुख पायो मिटे दुःख सुर नर के।। आये.।।

(124)

मतवाला है निराला, सदा पिये भंग का प्याला।

अंग अंग में भस्म रमाये, ओढे बाघ का छाला रे छाला।। मत.।।

मस्तक पर त्रिपुण्ड है चंदन, जटे गंग की धारा।

भाल दूज का चंद्र विराजे, गले सर्पों की माला रे माला।। मत.।।

देवों में वह इस्ट देव हैं भक्तों का रखवाला।

मानव ओ दानव सब पूजे, बैल सवारी वाला रे वाला।। मत.।।

देव दनुज सागर मंथन से, विष का घड़ा निकाले।

जग की रक्षा हेतु प्रभु ने, उसे पान कर डाला रे डाला।। मत.।।

सारी दुनिया उसको गाये और उसी को ध्याये।

हम अधमी भी उन्हीं को गायें शंकर डमरु वाला रे वाला।। मत.।।

(125)

तोरा भोला नाम कहाये।

जो भी तेरी शरण में आये, मन वांछित फल पाये।। तोरा.।।

जटा तूने गंग बहाये, शशि को भाल लगाये।

मस्तक पर श्रीखंड के चंदन, गले सर्प लहराये।

अंग–अंग में भस्म रमाये, डमरु सदा बजाये।। तोरा.।।

गले में तेरे मुण्ड की माला, उर बाघम्बर राजे।

नंगे पांव पर्वत पर घूमे, गौरी संग विराजे।

स्वंय हलाहल पान कर गये, सुर को अमर बनावे।। तोरा.।।

दुनिया को दे दान भक्ति का पाप का बोझा हटाये।

हम अधमीं भी इसी की खातिर निश दिन तुझको गायें।

एक नजर हम पर भी कर दो, तुम दानी कहलाये।। तोरा.।।

(126)

जय शंकर भोले नाथ।

ध्याये तुम्हें सो होवे सनाथ।। जय.।।

मनसा पूरी होवे उसकी, जो भी तुझे पुकारे।

स्वंय राम भी पूजा करके, फिर रावण को मारे।

भक्त को राज्य दिया लंका का जग को किया सनाथ।। जै.।।

सुख देते हो सबके प्रभु तुम, दुख को करते टारण।

सुर को अमृत पान कराके, कियो हलाहल धारण।

नीलकंठ बन गये उसीं दम, तुम हे काशी नाथ।। जै.।।

आक धतूरा बेल पत्र से तेरी पूजा होवे।

हम तो प्रभु इस लायक भी ना, जान इसे नित रोवें।

सबका तुम कल्याण किये पर क्या हम रहें अनाथ।। जै.।।

(127)

भोले बाबा को तुमने न जाना रे।

हुआ जग में, तेरा व्यर्थ आना रे।।

भोले का जो नाम ले, निशिदिन ध्यान लगाय।

जीवन होवे शांतिमय, कष्ट कभी न पाय।

फिर क्यों छोड़े, ऐसा खजाना रे।। हुआ.।।

योगी वो कैलाश का, रहे ध्यान में मग्न।

इनको ही दर्शन दिये, जाकी सांची लग्न।

फिर मन क्यों न उनमें लगाना रे रे।। हुआ.।।

उनसे जिसने बैर किया, हुआ तुरंत वो खत्म।

कामदेव भी न बचा, हुआ क्रोध में भस्म।

हैं मन को वृथा भरमाना रे।। हुआ.।।

भोले का ही रटन करो, जो चाहे कल्याण।

बिना भजन उनका किये, हो ना सके निर्वाण।

हो जा मन उन्हीं का दिवाना रे।। हुआ.।।

(128)

जटा से बहती गंगा की धार, गले में सोहे सर्पो की हार।

दानी कहाते हैं मेरे भोले बाबा।

सदा डमरु बजाते हैं मेरे भोले बाबा।।

शीश पे है चंदा, और गले रुद्र की माला।

बैल की सवारी, करते पहने वो बाघ की छाला।

रहते हैं, जंगल में, योगी कहाते हैं।। मेरे.।।

गौर वर्ण उनका, पर नीला हुआ कंठ विष से।

नीलकंठ से ही जाते पहचाने हैं भोले जिससे।

संकट से दुनिया को, वो ही छुड़ाते हैं।। मेरे.।।

देवघर में उनको दशकन्धर ने रखा था लाकर।

बैद्यनाथ हो गये, पहले पूजा था वैजू ने आकर।

गंगा जल, लाखों नर, नित उन पे चढ़ाते हैं ।। मेरे.।।

पापियों को भी है बस भोले का ही एक सहारा।

ले लिये शरण में अंत में भी जो उनको पुकारा।

दर्शन की, हम सब भी, आशा लगाते हैं।। मेरे.।।

(129)

भोले बाबा मुझे भी, दास तू स्वीकार कर लेना।

है मेरा पाप अति विस्तार, तू निस्तार कर देना।

तुम्हारे दर पे जो आये, कभी खाली न वो जाये।

सभी दुःख दूर हो उसका, सुखी वह जीव हो जाये।

नहीं इच्छा मुझे सुख की तू निज भक्ति का वर देना।। भोले।।

सवारी बैल का करते, रहे तू भूत प्रेतों में।

हो खाते भंग का गोला, लपटे गंग मस्तक में।

हूं करता दिल तुझे अर्पण, इसे स्वीकार कर लेना।। भोले।।

सुना है नाम लेने से ही, नर भव पार हो जाये।

मिले मुक्ति जिसको, तेरा दीदार हो जाये।

लगायी आस दर्शन की, उसे तू पूर्ण कर देना।। भोले।।

(130)

बसो मन हर गिरिजा के संग।

जिनसे वैर करन के कारण, रति पति भये अनंग।। बसौ।।

जिनके संग बसन से, त्रिभुवन पूजित हो गई गंग।

करत उद्धार जीव का अध से, जबहिं नहाये गंग।। बसौं.।।

सिर पर रखते वसुन्धरा को, तृण सम सदा भुजंग

क्योंकि नाग हार सम रखते, हर पल अपने अंग।। बसौं.।।

भोजन करते बिना मसाला, बेल पत्र ओ भंग।।

लगन कभी न छूटे ऐसा, दो भक्ति का रंग।। बसौं.।।

(131)

ना देखा ना सुना कहीं भी, शिव सा भक्तन उपकारी।

अपने जन के कारण हरिहर, रूप भये गंगाधारी।

एक भाग में जटाजूट, दूजै में मोर मुकुटधारी।

एक भाग में गौर वर्ण, दूजै बन गये श्यामकारी।

अर्द्ध भाग त्रिपुण्ड सुहाये, आधे ऊर्ध्व तिलकधारी।। अपने.।।

एक हाथ शोभे डमरु, दूजे में लियो शंख भारी।

एक हाथ त्रिशुल लिये, दूजे में कियो चक्रधारी।

एक तरफ हैं मुण्डमाल, दूजे में बैजन्तीधारी।। अपने.।।

आधे में बाघम्बर पहने, आधे पीताम्बर धारी।

एक तरफ है नन्दी, दूजो ओर गरुड़ की असवारी।

इसी रुप में बसौ निरंतर, शिवशंकर मन में म्हारी।। अपने.।।

श्री शिव जी की आरती

(132)

जै शिवशंकर त्रिपुरारी, प्रभु आरती करूं तुम्हारी।

महादेव, परब्रह्म, पिनाकी, हर भोले भंडारी।। जै.।।

सोहे दूज चंद्र मस्तकपे, जटा में गंगा धारी।

भूषित भांति–भांति सर्पो से, वसन बाघम्बर धारी।। जै.।।

तिलक त्रिपुण्ड भाल में राजे, गरल कंठ में धारी।

अंग–अंग में भस्म लगाये, रूद्र की माला धारी।। जै.।।

डमरु एक हाथ में बाजे, एक कमण्डल धारी।

धारण किये त्रिशुल एक में, एक जगत भय हारी।। जै.।।

तीन नयन कामारि सुहाये, वदन पंच सुखकारी।

बाम भाग गिरिराज नंदिनी, बसहा बैल सवारी।। जै.।।

घंट मृदंग ताल बहु बाजे, भूत प्रेत किलकारी।

गूंजे धुन घड़ियाल श्रृंग ओ शंख अमंगल हारी।। जै.।।

करे नीराजन भक्त प्रेम से, बम–बम शब्द उचारी।

करो वास 'देवेन्द्र' शिवा संग हिय कैलाश बिहारी।। जै.।।

(133)

आरति शिव भंडारी की।

उमावर, हर, त्रिपुरारी की।।

गले में मुण्डन की माला, लपेटे अंग नाग काला।

जटा में गंगा धारी की।। उमावर.।।

सुहाये शीश दूज चंदा, सवारी है बूढ़ा नन्दा।

संग में गौरी प्यारी की।। उमावर.।।

बाघ छाला पहने भोला, वगल में लिये भंग झोला।

हाथ मे डमरुधारी की।। उमावर.।।

संग में भूत प्रेत सोहे, नाच सब शिव का मन मोहे।

सकल दुःख मेटन हारी की।। उमावर.।।

श्री हनुमान वन्दना

(134)

संकट मोचन जै हनुमान, करुं सदा तेरे गुणगान।

मेटे कष्ट विभीषण के, श्रीराम से उन्हें मिला करके।

रावण का मद चूर्ण किये, तुम लंकापुरी जला करके।

क्षण ही में सागर लांघ गये, जिसको ना लांघ सके भगवान।। करुं।।

राम के शोक मिटाने को, तुम पर्वत द्रोण उतारे थे।

लक्ष्मण जी के प्राण बचे, सब जै जै कार उचारे थे।

सीता का दुःख भी दूर हुआ, जब दिया मुद्रिका प्रभु की आन ।। करुं।।

जाके तुम पातालपुरी, अहिरावण का संहार किया।

राम लखन को ले आ के, त्रिभुवन का भार उतार दिया।

रामागमन सुना करके, श्री भरत के तन में फूंके प्राण ।। करुं।।

जब–जब भीड़ पड़ी जन पे, तब–तब तुम आये बिन देरी।

सब सौंप दिया तुझको मैंने, तन, मन, धन सब अर्पित तेरी।,

'देवेन्द्र' तो कुछ भी मांगे ना, बस जन–जन का होवे कल्याण ।। करुं।।

(135)

बिनती करुं तुम्हारी, पवनसुत राखों लाज हमारी।।

तुम बिन कोऊ ना दीखे मेरा, स्वारथ हेतु जगत का घेरा।

काम भये फिर बात ना पूछे, देखे नाहिं पिछारी।। पवन.।।

जिसका भला करो इस जग में, करता वही बुरा पग–पग में।

नये नये साथी बनते हैं, भूले पितु महतारी।। पवन.।।

होता जहां धर्म की वाणी, जाता वहां ना कोई प्राणी।

जहां चले पाखंड कहानी, मंत्र मुग्ध नर नारी।। पवन.।।

पैसे की होती है पूजा, वही बना है शासक दूजा।

गला घोंट कर भी निर्बल का, चलता वक्ष उधारी।। पवन.।।

संकट मोचन नाम तिहारो, दीनों के तुम ही रखवारो।

आओ न 'देवेन्द्र' जल्द से, जगत पड़ा दुःख भारी।। पवन.।।

(136)

हे पवन तनय बजरंगबली, मुझको निज दास बना लेना।

आया हूं शरण तुम्हारी मैं, अब करुणा कर अपना लेना।

भटक कर आया तेरे द्वारे, ना कोई ठिकाना दुनिया में।

नाते–रिश्ते सब छूट गये, निज चरणों में जगह देना।। हे.।।

घबराया हूं इस जगती से, स्वार्थ बिना कोई बात करे ना।

देते यदि दूजे को कुछ भी, फल चाहे उसका लक्ष गुणा।। हे.।।

निष्कामी दीख नहीं पड़ता, जो गीता ने उपदेश किया।

है यतियों का भंडार भरा, पर विरले चाहे कुछ तजना।।

वहु पंथ चले हैं दुनिया में, आचार्य करे खींचातानी।

तब द्वन्द्व बढ़ाते आपस में, चाहे एक दूजे से लड़ना।। हे.।।

तुम संकट मोचन कहलाते, अब धर्म पड़ा है संकट में।

उद्धार करो प्रभु वसुधा का 'देवेन्द्र' विनय यह सुन लेना।। हे.।।

(137)

सुखकारी, दुखहारी, बजरंग महाबलधारी।
भक्तों के तू ही रक्षक हो, शंकर के अवतारी।। सुख.।।
लाल लंगोटा, लाल ध्वजा है, लाल गदा कर भारी।
अंग–अंग सिंदूर लगा के, लाल कियो तन सारी रे सारी।। सुख.।।
पवन पुत्र है नाम तुम्हारा, हे अंजनी के प्यारे।
संदेशा सीता का लाये, बाग अशोक उजारी, उजारी।। सुख.।।
प्राण बचाये लक्ष्मण के तुम, जड़ी सजिवन लाये।
खेल–खेल ही में तूने, सारी गिरि द्रोण उपारी उपारी।। सुख.।।
वास करो मेरे मन भीतर, राम दूत असुरारी।
अंधकार को दूर हटा के, कर दो प्रभु उजियारी उजियारी।। सुख.।।

(138)

तेरे जैसा प्रिय प्रभु का, कोई और नहीं अंजनी लाला।
तुझसे मिलने कारण मोहन, अपना रुप बदल डाला।। तेरे.।।
राम बन गये कृष्ण, बनी सीता मैया, रुक्मिणी रानी।
गरुड़ सुना संदेश तुम्हें, लौटा निज बल का अभिमानी।
पहुंच के उससे भी पहले, उसका अभिमान मिटा डाला।। तुझसे.।।
द्वार खड़ा था चक्र सुदर्शन रोक दिया उसने तुझको।
पूंछ लपेट पहुंच गये अंदर पास प्रभु के ले उसको।
प्रभु ने कहकर तुझसे चक्र सुदर्शन को छुड़वा डाला।। तुझसे.।।
दर्शन पाते ही मोहन के चरणों में अकुलाय गिरे।
पुलकित हो गये रोम नैन से सावन भादो नीर झरे।
गद–गद हो श्री कृष्ण चंद्र ने हिय से तुझे लगा डाला।। तुझसे.।।
हुए सहायक अर्जुन के तुम, रथ के ऊपर आकर के।
टार दिये सारे संकट तुम, बड़े–बड़े शर खाकर के।
मेरा भी उद्धार करो, जपता हूं तेरी ही माला।। तुझसे.।।

(139)

हे अंजनी नंदन बजरंगी, अब तेरा एक सहारा है।

दो चरण भक्ति इस पापी को, यह फिरता मारा–मारा है।। हे.।।

तुम ही प्रभु अधमों के तारक, सब लोग कहें ऐसी बातें।

हूं अधमों से भी मैं बढ़कर, कोइ जोड़ी नहीं हमारा है।।

हो अजर अमर तू दुनिया में, वर पाके सीता मैंया के।

अब तुम बिन कोऊ नहीं मेरा, सारे जग ने फटकारा है।। हे.।।

सब कहते हैं जल्दी सुनते, तुम शरण में आये लोगों की।

दरबार में तेरे आके भी, क्या मेरा नहीं गुजारा है।। हे.।।

(140)

सबका मानस आलोकित हो, हनुमान कृपा ऐसी कीजै।

जन–जन में प्रेम बढ़ा करके, सब द्वेष भाव को हर लीजै।

एक दूजे से सब डरते हैं, अपने स्वारथ को मरते हैं।

देकर के ज्ञान प्रकाश प्रभु सबका मन निर्मल कर दीजै।। सबका.।।

कुछ लोग मरे खाते–खाते, कुछ लोग भूख से मर जाते।

सब हिल मिल आपस में खाये, ऐसा वरदान प्रभु दीजै।। सबका.।।

दुःख में न कभी मैं घबराऊँ, ना सुख में तुझे भूल जाऊँ।

हो जाय अचल भक्ति मेरी, ऐसी करुणा मुझ पर कीजै।। सबका.।।

(141)

आ जा अंजनि लाला आस पुराने के लिये।

तरस रही अंखियां दर्शन पाने के लिए।।

कबसे आस लगाये हूं मैं, क्यों तू देर करे इतना।

कभी नहीं क्या पूरी होगी, देखा मैंनें जो सपना।

डूब रही है नैया इसे बचाने के लिए।। तरस.।।

पापी हूं मैं जनम–जनम का तुम हो अधमों के तारक।

सुनते नहीं पर क्यूं मेरी, हो सुर नर मुनि क तुम पालक।

अब ना देर लगाओ, पाप मिटाने के लिये।

भूल गया था मैंने अपना, कौल गर्भ में था जो किया।

काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह में, नाम तुम्हारा नहीं लिया।

आजा इन दुष्टों से हमें छुड़ाने के लिए।। तरस.।।

(142)

जापे तुम हनुमान सहाई।

वाको कोउ बिगाड़ सके ना, कालहुं शीश नवाई।। जापे.।।

तेरे डर से निशिचर कांपे, भागत फिरत लुकाई।

भूत पिशाच नाम सुनते ही, भागहिं प्राण बचाई।। जापे.।।

रखते हो जन की परतिज्ञा, आपन मान गंवाई।

शरण में आये लोगों के तुम, बिगड़े काम बनाई।। जापे.।।

मस्त रहे सियाराम भजन में, हरदम ध्यान लगाई।

सभा बीच दिखलाये सीना, बैठ सिय रघुराई।। जापे.।।

राम भक्ति के तुम हो दाता, प्रभु से यह वर पाई।

चरण कमल की दे भक्ति, राखहुं अपनी ठकुराई।। जापे.।।

(143)

घुंघरु बंधाये पग, तिलक लगाये सिर।

नाच रहा प्यारा, मगन हो अंजनि का लाला।

सब भक्तों का यह रखवाला।। घुंघरु।।

वीर बड़ा भारी जला दी लंक नगर सारी।

करते भक्तों की रक्षा, लिए कर गदा बड़ा भारी।

हे बजरंगी, तू रण रंगी, करते मन को उजाला।। घुंघरु।।

लाल गदा धारी, प्रभु शंकर अवतारी।

रसिया राम नाम का तू बजाते रहते करतारी करतारी।

रहे गान में सदा ध्यान में, पहने तुलसी की माला।। घुंघरु।।

प्रेम से जो गाये, तुम्हारी मूरत को ध्याये।

मिटाये भव–बंध अपना, राम की भक्ति वह पाये वह पाये।

कभी नहीं दुख, सदा परम सुख, करते तुम प्रतिपाला।। घुंघरु।।

(144)

गूंज रही है घर–घर में शहनाई वीर महान की।

राम भक्त हे हनुमान, बजरंग तुम्हारे नाम की।

सीता को ढूढ़ने के कारण लांघ समुन्दर पार किया।

भक्त विभीषण वहां तुम्हें, सीता मैया का पता दिया।

मिटा शोक वैदेही के जब दिया अंगूठी राम की।। राम.।।

ले आज्ञा सीता से, खाने, वन अशोक प्रस्थान किया।

दिया उजाड़ बाग को फिर, राक्षस का काम तमाम किया।

जला दिया सोने की लंका, दशकन्धर बलवान की।। राम.।।

बलि देने श्री राम लखन को, अहिरावण ने चुरा लिया।

दे बलि उसका ही तूने, दोनों भाई को छुड़ा लिया।

हो प्रसन्न सब करने लगे, जै कार तुम्हारे नाम की।। राम.।।

होती जहां राम की चर्चा, रहते तू मौजूद वहां।

रहते हो तैयार देखते, पड़े न कोई विघ्न वहां।

देना भक्ति दोष भुलाकर, इस बालक नादान की।। राम.।।

(145)

संकट टारण मंगल कारन देखो पलक उघाड़,

शरण हम आये हैं।

आये हैं हम आये हैं शरण तिहारो में आये हैं।

जै बजरंगी अंजनिनंदन शंकर के अवतार।। शरण.।।

लाल लंगोटा वाला तू, जपे राम की माला तू।

संतो के प्रतिपाला तू, जग का है रखवाला तू।

करते वन्दन सभी तुम्हारे, जग के पालन हार।। शरण.।।

बालेपन में खेल किया उगे भानु को भक्ष लिया।

देवों ने गुणगान किया तब सूरज को छोड़ दिया।

दिये अटल वरदान राम निज भक्ति का दातार।। शरण.।।

भंवर बीच नैया मेरी, एक सहारा है तेरा।

करना न हनुमत देरी, सबने मुझसे मुख फेरा।

छोड़ शरण मैं जाऊँ कहां अब, रहा न कोई द्वार।। शरण.।।

(146)

हे मारुती नंदन बजरंगी, तेरे बल का नहीं ठिकाना है।

रहते कीर्तन में मस्त सदा, सिय राम का तू दिवाना है।

अवतार लिया धरती पर तू, रघुवर की सेवा करने को।

कर दिया दुष्ट से रिक्त मही, तू वीर महा बलवाना है।। हे.।।

रक्षा की तूने लक्ष्मण की, संजीवन बूटी लाकर के।

खुश होकर प्रभु ने दी भक्ति, नहीं तुझ सा कोई सुजाना है।। हे.।।

महिमा ना तेरी जान सके, खुद शेष नाग भी हार गये।

अब तुम बिन कोई नहीं मेरा, सब अपना हुआ बेगाना है।। हे.।।

(147)

भक्त राज कहलाने वाले, पवन पत्रु हनुमान।

करे सुर, नर, मुनि तेरा गान।

शंकर सुवन केसरी नंदन, अंजनि के संतान।। करे.।।

रहे हमेशा ध्यान लगाये, सियाराम को मन में बसाये।

कभी न टूटे ध्यान तुम्हारा, रैन दिवस न जान।। करे.।।

लीला कोई जान न पाये, भक्ति भाव से शीश नवाये।

हार गये थक कर बैठे खुद, शेषनाग भगवान।। करे.।।

संकट में जब कोई पुकारे, उसे संकट से तुरंत उबारे।

नष्ट हो रहा धर्म आज, आओ हे कृपा निधान।। करे.।।

(148)

अंजनि का प्यारा बड़ा बलवान, महिमा तुम्हारी न जाये बखान।

बड़ा परतापी है बजरंग वाला, सियाराम पुजारी है हनुमत लाला।।

बालपने में ही तू उगते सूरज को मुख में छुपाया।

हो गया अंधेरा, तब आके प्रभु ने छुड़ाया।

वर देकर अटल किया, पूजे नर नारी।। हनुमत.।।

फांदकर समुन्दर तू ने सीता का पता लगाया।

थी जलाई लंका प्रभु सेवक के घर को बचाया।

संदेशा सीता का प्रभु को सुनाई।। हनुमत.।।

लाके तू संजीवन श्री लक्ष्मण के प्राण बचाये।

रामचंद्र खुश हो अपने सीने से तुझको लगाये।

सब गायें यश तेरा असुर संहारी है।। हनुमत.।।

(149)

हनुमत् नाम परम सुखकारी।।

पवन के पुत्र अंजनी लाला, शंकर का अवतारी।। हनुमत.।।

भूत पिशाच, निशाचर, डाकिनी, जन के अति अपकारी।

भागहिं नाम सुनत ही तेरो, जिमि भानुहिं अंधियारी।। हनुमत.।।

इन्द्रिन दास बनायो मोको, मामहि को जिमि नारी।

हो मदान्ध भूला मैं जिमिधन पा खल स्वजन बिसारी।। हनुमत.।।

अंत समय जब सब कुछ हारा, सोच भयो है भारी।

कर अपराध क्षमा पितु सुत सम, आयो शरण तुम्हारी।। हनुमत.।।

(150)

ना सुख चाहूं हे बजरंगी, दुःख ही मुझको मिल जाये।

नाम भुलाये सुख में तेरी, दुःख में हर पल याद आये।। ना.।।

सुख है रवि की ढलती छाया, क्षण आये क्षण में जाये।

दुख को अपना लेने पर यह, फिर ना आये ना जाये।। ना.।।

मार्ग दिखाती है बाधायें, है ऐश्वर्य भुला देता।

एक फंसा दे बीच भंवर में, एक प्रभु से मिलवाये।। ना.।।

बनता दुश्मन भाई–भाई का, सुख पाने को ही जग में।

वर दो दुख में प्रेम भक्ति तेरे चरणों की मिल जाये।। ना.।।

(151)

बस गयो तेरी मूरत मन में।

पवन पुत्र सिय प्यारा।। बस.।।

देखत नैन थकित भये मेरौ।

रुप टरत नहीं टारा।। बस.।।

लाल लंगोटा लाल गदा है।

लाल सूरत बड़ा प्यारा।। बस.।।

पाँव खड़ाऊँ जेनउ कान्ध पर।

पर्वत सा तन सारा।। बस.।।

तुलसी की माला उर शोभे।

ऊर्ध्व तिलक सिर धारा।। बस.।।

बसी रहे मेरो मन अंदर।

प्रभु यह रूप तुम्हारा।। बस.।।

(152)

राम के दूत, सिया के प्यारे। वास करो प्रभु मन में हमारे।।

महावीर हनुमत नाम तुम्हारे।। वास.।।

राम का संदेशा तू ने सिया को सुनाया। वर दे सिया ने तुझे अमर बनाया।

राम सिया रहें दिल में तुम्हारे।। वास.।।

सभा बीच तुने निज भक्ति दिख दी। चीर के कलेजा सियराम दिखा दी।

सबने किया जयकार तुम्हारे।। वास.।।

पूजा मैं करुगां तेरी, फूल चढ़ाऊँगा, ज्योति जलाके तेरी आरती उतारुँगा।

मन में बसा दे निज चरण हमारे।। वास.।।

(153)

आयो शरण बजरंग तुम्हारी।

नैया पड़ी मझधार हमारी।। आयो.।।

अपनी कृपा की दे पतवार।

पार लगा दो नाव हमार।। आयो.।।

बीच भंवर में दूर किनारा।

दीख पड़े ना कोई सहारा।। आयो.।।

करुणा कर प्रभु जल्द उबारो।

एक लगाया आस तिहारो।। आयो.।।

(154)

जय जय अंजनि लाला, पड़ता हूं तेरी चरणा।

व्याकुल है जग दुःख से, तू सबका कष्ट हरना।। जै.।।

है भूखा कोई नंगा, है लंगड़ा कोई अंधा।

इस नाइंसाफी को, प्रभु कुछ तो अल्प करना।। जै.।।

परवाह नहीं मुझको जग का दुख मिल जाये।

बदले में सुख मेरा दुनिया में बांट देना।। जै.।।

ना धर्म कहीं दीखै, चहुं और पाप ही है।

प्रभु आके अब जग में, थोड़ा भी बचा रखना।। जै.।।

किस भांति तुझे गाऊँ, है ज्ञान नहीं इसका।

कर भूल क्षमा मेरी निज भक्ति दान देना।। जै.।।

(155)

सियाराम को गाने वाले पवन पुत्र हनुमान।

आये हैं हम शरण तुम्हारे अंजनि के संतान।।

देना भक्ति का दान।।

कर में ले करताल, मस्त हो, राम भजन तू करते।

ध्यान लगा कर सुनते रहते हरि लीला का गान।। आये.।।

सिवा भजन के दूजा कोई काम तुझे ना भाता।

नाते रिश्ते तोड़ सभी एक जोड़े प्रभु से नाता।

भूल गये पितु मातु बंधु सब, तन का भी न ज्ञान।। आये.।।

जहां पुकारे भक्त तुम्हें, तू दौड़ तुरंत आ जाये।

संकट में ना पड़े कभी वह, जो तुझको नित गाये।

भटक रहा है मन मेरा, हर लो इसका अज्ञान।। आये.।।

(156)

हे पवन पुत्र आया तेरे द्वार पे।

अब लगाओ शरण में प्रभु तू मुझे।। हे.।।

हो सकल विश्व के एक रक्षक तुम्हीं।

वर दो ऐसा सदा जिससे गाऊँ तुझे।। हे.।।

हूं पापी मैं सबसे बढ़कर, है जोड़ी नहीं कहीं मेरा।

तू हो अधमों के उद्धारक, कहते हैं ऐसा जग सारा।

लाज रखना प्रभु अपने इस नाम की

पार भव–सिंधु से कर प्रभु तू मुझे।। हे.।।

रक्षा करते हो भक्तों की जब संकट में वह घबराता।

कर देते उसके दूर कष्ट वह परम शक्ति को पाता।

हूं खड़ा विघ्न बाधाओं के बीच में,

अब किधर जाऊँ यह भी ना सूझे मुझे।। हे.।।

है अंधकारमय दिल मेरा, ना जान मैं पूजा वंदन।

किस भांति कहो पाऊँ तुझको, हे बजरंगी अंजनि नंदन।

भूल अपराध सारे हमारे प्रभु,

कर कृपा भक्ति चरणों की देना मुझे।। हे.।।

(157)

तू संकट हरण कहाये,

नाम रटे जो तेरा, जीवन अपना सफल बनाये।। तू.।।

अंजनि मां के पुत्र हो प्यारे, शंकर सुवन कहायें।

पवन पुत्र हो जग ये जाने तुझको हरदम ध्याये।

राम भक्त हे बजरंगी, हम भी नित तुझको गायें।। तू.।।

नाम रटन में मस्त रहे, तुम दिल में राम बसाये।

मां सीते की सेवा करके, खुद को अमर बनाये।

अष्ट सिद्धि नव निधि के दाता, सारी दुनिया गाये।। तू.।।

लाल सूरत पर लाल लंगोटा, लाल ध्वजा फहराये।

लाल गदा धारण कर कर में पाप को दूर भगाये।

शरण पड़े हैं हनुमत तेरे, क्यूं मुझको ठुकराये।। तू.।।

(158)

जै बजरंगी जै हनुमान।

हे रणरंगी तुम्हें प्रणाम।।

अधम उधारन तुम हो प्रभु जी, एक अधम मैं भारी।

शरणागत हूं नाथ तेरा मैं, चाहूं कृपा तुम्हारी।

हे दीनों के दीनबंधु, तुम करो कृपा का दान।। जै.।।

जीवन डोरी हाथ तुम्हारे, हे संकट के टारण।

भक्तों की रक्षा के खातिर, गदा कियो कर धारण।

हे सबको सुख देने वाले, कर मेरा कल्याण।। जै.।।

पूजा तेरी घर–घर होवे, हे सीता के प्यारे।

महिमा तेरी सब नित गाये, हे शंकर सुत न्यारे।

शरण में रखलो प्रभु मुझको भी, आया तेरे धाम।। जै.।।

श्री हनुमान जी की आरती

(159)

बजरंग महाबल धारी, प्रभु आरती करुँ तुम्हारी।

अगर कपूर और घृत बाती, साज रजत की थारी।। प्रभु.।।

ऊर्ध्वपुण्ड सिर शोभे चंदन, रण बांकुरा अंजनी नंदन।

तुलसी माल गले में राजे, राम–सिया हिय धारी।। प्रभु.।।

अंग–अंग सिन्दूर रमाये, रहें निरंतर ध्यान लगाये।

राम काज को आतुर रहते, लाल रंगोटी धारी।। प्रभु.।।

बायें कर में पर्वत सोहे, गदा दाहिने मन को मोहे।

करते नाश सदा दुष्टों का, शंकर के अवतारी।। प्रभु.।।

भक्त जनों के संकट टारे, आर्त्त होय जो नाम पुकारे।

देते हो वर राम भक्ति का, जो होता अधिकारी।। प्रभु.।।

करुँ प्रेम से बिनती तेरी, नैया पार लगाओ मेरीं।

आया हूं 'देवेन्द्र' शरण में रखियो लाज हमारी।। प्रभु.।।

होली समवेत

(160)

शिव खेले होली जंगलवा में,

अमरकंठ चंडिका विराजे, जंहवा शंभु बगलवा में।। शिव.।।

भोला हाथ भभूति का झोला, नाग लपेटे गलवा में।

गिरिजा रंग गुलाल उड़ावे, घंटा बजय मंदिरवा में।। शिव.।।

नाचय योगिनि गावय होली, गुंजय शोर पहड़वा में।
ढ़ोलक, झांझ, मजीरा बाजे, गायब प्रेत कहरवा में।। शिव.।।
गणपति पावे मोदक लड्डू, नाच करे ले करवा में।
कार्तिक नभ में रंग उड़ावे, भीगे संत फुहरवा में।। शिव.।।
भींगे सोन, गायत्री, रेवा, निर्झर झड़े पहड़वा में।
गान करे 'देवेन्द्र' मनहिं मन, पुलके अंग महलवा में।। शिव.।।

(161)

होली अमरकंटक में हिलमिल खेलय संत समाज।
वास करे शिव संग भवानी, भक्तन राखन लाज।। होली.।।
कल–कल बहती है जहं रेवा, जापे जग को नाज।
देती मुक्ति नराधम को भी, क्षणहिं पुरावे काज।। होली.।।
गावे गानि संत मंदिर में, बजाय गायन साज।
रंग, गुलाल लगाय परस्पर, बारे त्रिभुवन राज।। होली.।।
प्रीति बढ़ाय मिले सब आपस, बैर भुलाकर आज।
मन से दूर हटाकर माया, करें सदा शुभ काज।। होली.।।
जन्म–जन्म पद सेवा मांगे, स्वर्गहु कछु न काज।
हो 'देवेन्द्र' आस यह पूरण, रख लेना शिव लाज।

(162)

जनकपुर होली खेलय रघुवीर।
इत सखि संग सिया सुकुमारी, उत लक्ष्मण रघुवीर।
दोऊ भाईन के भीगे पीताम्बर, सखि सहित सिय चीर।। जनकपुर।।
लाल भये दोऊ अंग बसन संग, श्यामल गौर शरीर।
अबीर गुलाल लगाय परस्पर, पुलकित होय शरीर।। जनकपुर।।
प्रेम विभोर भये नर नारी, नयन बहे दोउ नीर।
बजाय ढोल, मृदंग मजीरा, मुरली करय अधीर।। जनकपुर।।
गाली मधुर देत मिथिलानी, हंसत लखन रघुवीर।
धन्य जनकपुर जंह खेलय 'देवेन्द्र' सिय–रघुवीर।। जनकपुर।।

(163)

होली कुंज गलिन में खेलय, राधा नन्दकिशोर।

ग्वाल बाल सब राह निहारत, पिचकारी रंग बोर।

देखत रंग डारब गोपिन पर, भलहु वहावे नोर।। होली.।।

गोपीन संग चली श्री राधे, अवलोकत चहुं ओर।

आजु न छोड़ब वनवारी को, बरु अपशय हो मोर।। होली.।।

कोउ भर लिए अबीर की झोली, कोऊ लिऐ रंग घोर।

कोउ नवनीत लिए कर निकसी, ढूढ़न निज चितचोर।। होली.।।

मिले परस्पर आपस में सब, रंग बरसे चहुं ओर।

भीगे ग्वाल सखा संग मोहन, भीगीं सखिन पटोर।। होली.।।

देव वृन्द नभ सौं देखत छवि, विनय करै कर जोर।

नयन थकित 'देवेन्द्र' सुरन को स्वर्गहु सुख बहु थोर।। होली.।।

(164)

जनक भवन में बना हिडोला,

झूले सिया अवध–बिहारी ना।।

मणि निर्मित झूलन पर बैठे, चपला, चमके अंधियारी ना।

कोउ सखि ठाढ़ झुलावत झूला, कोउ मिलि गावय गारी ना।। जनक.।।

अग्रलतादिक पान पवावय, केशर लवंग, सुपारी ना।

मधुर–मधुर संगीत अलापे, कंजरी गावे कजरारी ना।। जनक.।।

पंखा चंवर डुलावय वनिता, मदन दहे सुरनारी ना।

रमकि झुमकि नभ मेघा बरसे, मन्द–मन्द बहे बयारीं ना।। जनक.।।

सुर नर मुनि जा ध्यान लगावे, ढूढ़ंत सदा जग सारी ना।

ता 'देवेन्द्र' नारी मिथिला की, मर्कट नचाबे मदारी ना।। जनक.।।

(165)

आई जनक भवन में सखियां, झूलन संग लखन रघुवीर।

सज धज के निकली सब घर से, पहन मनोरम चीर।

कोऊ कहय लक्ष्मण संग झूलब, कोउ कहे सिय रघुबीर।। आई.।।

करय ठिठोली आपस में सब, पुलकित होय शरीर।
बटगबनी, बरमासा गावय, विरहिन करय अधीर।। आई.।।
टेरय कजरी अरु मलार, नर–नारी रहे ना धीर।
सोहर–समदाउन गायब सब, नैन बहे दोऊ नीर।। आई.।।
कबहुं झुलावत राम सिया को, कबहु अनुज रघुवीर।
झूलत कबहुं संग वैदेही, कबहुं लखन रघुवीर।। आई.।।
सुरतिय धरि रुप मिथिलानी, बाढ़ी अनुपम भीड़।
अवलोकत 'देवेन्द्र' रसिकगण, सुधिना तनिक शरीर।। आई.।।

(166)

सिया सुकुमारी पिया संग झूले।
मणिमय स्वर्ग हिडोले बैठे, पिया–प्रिया समतूले।। सिया.।।
रघुवर श्याम, गौर वैदेही, जिमि बिजुरी धन मूले।
पीत नील दोउ बसन धरे तन, निरख रुप मन भूले।। सिया.।।
चंद्रकला विमलादिक लखि सब, हरषि झुलाबहिं झूले।
गावे सब मिलि गीत मनोहर, ऋतु पावस अनुकूले।। सिया.।।
मंद–मंद मुसुकाय, रामसिय, लय हिचकोला झूले।
रे मन नेह लगाकर इनसे, करले अघ निर्मूले।। सिया.।।

(167)

झूले कनक हिंडोला राम।
रतन जड़ित पलना पर बैठे, जनक सुता लिए बाम।। झूले.।।
श्याम बदन केसरिया जामा, मुखन सुहाये पान।
मोतिन माल गले बीच शोभे कान्ध धनुष कर वाण।। झूले.।।
हंसि हंसि सखि सब नाचय गावय, छेड़ि मनोहर तान।
करत निछावर राम–सिया पर, सब तन, मन, धन प्राण।। झूले.।।
दोउ परस्पर झूले झूलाये, ले ले कर विश्राम।
उपमा कौन करे जोड़ी का रति संग लज्जित काम।। झूले.।।

(168)

सखि सब चली डगर मधुबन की, हरि संग झूला झूले ना।

आयल सावन परम सुहावन, कोयल करत किलोर।

देख घटा घन की नभ माहीं वन में नाचय मोर।

घर से निकली राधा प्यारी, नाचत ब्रज की नारी ना।। सखि.।।

गावत चली गीत कजरी के, सुमिरत नंद किशोर।

तन की सुधि ना रही तनिक भी, चित ले गयो चितचोर।

फर–फर उड़े हवा में आंचर, ध्वजा अमर पति नाई ना।। सखि.।।

कोऊ बजावे ढोलक मुख से, कोऊ बजावे वीणा।

कोऊ बजावे धुन मुरली की, कोउ विलपे अति दीन।

पायल झनक–झनक कर बोले, अब गिरिधारी मिलिहें ना।। सखि.।।

लगी झूलने झूला सब मिलि, मन मोहन के संग।

करे सुमन की वृष्टि देवगण, रति संग चकित अनंग।

परमानंद भयो रसिकन संग मन 'देवेन्द्र' अबोले ना।। सखि.।।

(169)

झूलत श्यामा श्याम हिंडोर।

मणिन रचित पलना पर बैठे, रेशम लगी डोर।। झूलत.।।

दादुर, मोर, पपीहा बोले, कोयल करत किलोर।।

रमकि–झमकि नभ मेघा बरसे, गरज करे घनघोर।। झूलत.।।

चहुं दिश सखि सब नाचत गावत, मंद परे सब शोर।

प्रिय प्यारी गल बहियन झूलत, रसिकन नैन चकोर।। झूलत.।।

ललिता सखी झुलावत झूला, तन–मन की सुध छोड़।

झांकी कोटि मनोज लजावन, राधा नंद किशोर।। झूलत.।।

(170)

झूला झूले कुंज गलिन में, राधा संग मुरारी ना।।

रेशम डोर लगाये हिंडोला, कदम्ब की डारी ना।

चमके बिजुरी जिमि घनमंडल, तिमि हरि राधा प्यारी ना।। झू.।।

भ्रमर मधुर घुन गीत सुनावे, हार बैजन्ती ना।

नाचे मोर मस्त हो वन में, देख घटा घन कारी ना।। झू.।।

वरषे सुमन युगल जोड़ी पर, सुर वाला की ना।
देख लजाये शोभा रति पति, तिय संग जंह गिरिधारी ना।। झू.।।

(171)

यमुना किनार बना है हिंडोला, झूलत नन्द कुमार आली।
सावन मास सुहावन लागे, मंद–मंद बहत बयार आली।। यमुना।।
झूलय श्याम झूलावत राधा, संग लिये ब्रजनार आली।
झोंका दय झूलत मनमोहन डोलत मोतिन हार आली।। यमुना।।
दादुर टर–टर टेर लगावे, झिंगुर करे झनकार आली।
पपिहा पी–पी शोर मचावे, बुन्दन पड़त फुहार आली।। यमुना।।
प्रेम विभोर झुलावत सखियां, गावत गीत मलार आली।
गोपी भाग्य सराहत सुरगण, देख अलौकिक प्यार आली।। यमुना।।

ज्ञान पद

(172)

रे मन दुष्टन संग तज्यो।
बन के गूंगा कान मूंद दोउ, हरि ही सदा भज्यो।। रे.।।
बड़ो चातुरो बात करन में, मिथ्या डींग भर्‌यो।
मत पड़ना इनकी बातों में, कंटक मांहिं धर्‌यो।। रे.।।
मुख से बात करे अमृत सम, हिय में गरल भर्‌यो।
प्रीत बढ़ा विष पान करावे, जीवन नरक कर्‌यो।। रे.।।
हरदम निंदा करे दूसरा, दूजा सुखहिं जर्‌यों।
दूजे का दुख देख खुशीं हो जहं तंह सगरि वक्यो।। रे.।।
धन देखे यदि कबहु दूसरो, वन हित सबहिं हर्‌यो।
देखत ही टल जाना इनसे, कबहूं ना रार कर्‌यो।। रे.।।
करना संतन संग इन्हें तज, बाधा सकल हर्‌यो।
सत् संगति सम सुख ना दूजा, हिय 'देवेन्द्र' धर्‌यो।। रे.।।

(173)

मन क्यूं तृष्णा मोह करे।

इक दिन तो जाना इस जग से, धन, जन मान परे।। मन.।।

उपजे क्रोध लोभ के कारण, क्षण में बुद्धि हरे।

बुद्धि हीन मन नाशै जनको, जिमि तृण अनल जरे।। मन.।।

संचय करके महल बनाया, धन ऐश्वर्य भरे।

देखत प्राण निकल गए तन से, धूलि में देह परे।। मन.।।

करे गुमान जाहि नर तन पर, भूलि जीवन सगरे।

होय आहार कींट पंछी का या तरु संग जरे।। मन.।।

लोभ करो हरि नाम जपन का, आवागमन हरे।

प्रभु लीला में होइ मोह, 'देवेन्द्र' ना काल डरे।। मन.।।

(174)

रे मन मत अभिमान कर्‌यो।

करता आया नाश सदा से, धरि हिय इसे डर्‌यो।। रे मन.।।

नारद जैसा महा तपस्वी, नारी विरह अर्‌यों।

कर्म अकर्म ना दीखा कुछ भी, प्रभु पर कोप कर्‌यो।। रे मन.।।

कनककशिपु सा अति अंहकारी, त्रिभुवन राज कर्‌यो।

नरहरि प्रकट भये खंभन ते, नख ते प्राण हर्‌यो।। रे मन.।।

सहसबाहु सा परमवीर रावण घर बांधि धर्‌यो।

गर्व नशांये परशुराम, क्षत्रिण महि रिक्त कर्‌यो।। रे मन.।।

दशकन्धर सा महाप्रतापी, निज शिव मुग्ध कर्‌यो।

हरी जानकी, कुल समेत, रामहिं क्रोधाग्नि जर्‌यो।। रे मन.।।

बंदी करि पितु, मातु, बहिन कंसासुर राज कर्‌यो।

सखा संग हरि ताहि संहार्‌यो, भूधर भार हर्‌यो।। रे मन.।।

प्रबल शत्रु है गर्व जीव का, पुण्य विनाश कर्‌यो।

'देव+इन्द्र' हरि नाम जपन कर, कबहु ना शत्रु रह्यो।। रे मन.।।

(175)

रे मन विषयन काहे रमे।

विष से भी यह अति दुखदायी, मन अघ बीज जमे।। रे मन.।।

नाश करे शुभ कर्म जीव का, कोटिहु जन्म गरे।

लगे करन दुष्कर्म, धर्म तजि, इत उत सब बिगरे।। रे मन.।।

होवय दृष्टि दोष मय उसका, जियतहिं जीव मरे।

धर्म, अर्थ, सुख त्याग जहां से, यमुपुर जाय सरे।। रे मन.।।

नाता जोड़ नाम से पामर, अब क्यूं पंक सने।

लेंगे हरि उबार तुझको भी, कबहुं न दोष गने।। रे मन.।।

(176)

मत अभिमान करो इस तन पे, जीवन का न ठिकाना है।

माटी का है बना एक दिन, फिर उसमें मिल जाना है।

देगा ना यह काम वहां पर, जब यमदूत बुलायेगा।

अस्थि चर्म सब छोड़ यहीं, यमदूत पकड़ ले जायेगा।

देंगे जला लोग इसको, या माटी में गड़ जाना हैं।। माटी.।।

पल पल का तेरा हिसाब है, धर्मराज के यहां लिखा।

तेरे किये पुण्य पापों को, दिया जाएगा तुझे दिखा।

भोग पुण्य पापों को फिर, लख चौरासी भरमाना है।। माटी.।।

करले भजन राम का मन से, देगा साथ वही तेरा।

पाप नाश कर तेरे सारे पार लगायेगा बेड़ा।

कर निष्काम भक्ति प्रभु का गर आवागमन मिटाना है।

(177)

काहे जन्म अकारथ खोवै।

भज ले सत्य नाम हरि का क्षण मांहि पाप सब धोबै।। काहे.।।

संगी साथी सब झूठे हैं, मूरख बन क्यूं रोवै।

देगा नहीं सहारा कोई, जब यम फांसी होवै।। काहे.।।

आधा जीवन सोबत बीते, युवा त्रिया संग खोवै।

बचपन में ना ज्ञान रहे, चौथेपन कुछ ना होवै।। काहे.।।

कर ले भजन प्रभु का नर तन बार–बार ना होवै।

यही द्वार है जहं से फिर, लख चौरासी ना होवै।। काहे.।।

(178)

करो मन राम नाम से प्रीति।

इस तन का ना कोई ठिकाना, कब जाये यह बीत।। करो.।।

भाई, बंधु, कुटुम्ब कबीला, अपनाये बहु नीत।

ना टूटे बंधन माया का, बुद्धि करे विपरीत।। करो.।।

कोई नहीं सहारा देगा, झूठे हैं सब हीत।

जब आयेगा काल का फेरा, छूटेंगे सब मीत।। करो.।।

करले नाम प्रभु का सेवन, हिल–मिल गाओ गीत।

साथ न छोड़ेगा यह तेरा, एक यही है मीत।। करो.।।

(179)

करो मन हरि भक्तन का संग।

बाको संग करन से होवे, गाढ़, भक्ति का रंग।

दूर होय तम हिय से तेरो, सुन हरि कथा प्रसंग ।। करो.।।

तरा अजामिल महापातकी, करके ही सत्संग।

रख नारायण नाम तनय का, पायो हरि का संग ।। करो.।।

कर सत्संग धरा मस्तक पर, रखते सदा भुजंग।

बना महर्षि लुटेरा डाकू, मिले भगत का संग ।। करो.।।

भक्ति बढ़ा ले हिय में अपने, काला कम्बल रंग।

पाले पद निर्वाण राम का, जीत काम रिपु जंग ।। करो.।।

(180)

सत्य सम दूजा और न धर्म, झूठ ही सबसे बड़ा अधर्म।

सत्य सहारे सृष्टि रचे अज, न्याय करे नित धर्म।

पालन विष्णु रुद्र संहारण, करें सत्य के कर्म।। सत्य.।।

शशि दे शीतल सुधा, जान सत्य का मर्म।। सत्य.।।

हरे तम भानू सदा दे गर्म।

शेष उठाये वसुंधरा शिर जान सत्य का मर्म।

छिन्यो राज–पाट हरि बलि का, तबहुं ना त्यागो धर्म।

हरि खुद बने द्वार रक्षक, बंध बलि के सांचा कर्म।। सत्य.।।

हरिश्चन्द्र बन गयो शुद्र, पर तज्यो ना सांचा कर्म।

वर देने हरि स्वयं पधारे, आई महर्षि को शर्म।। सत्य.।।

राम गयो वनवास करन को, सत्य पुत्र का कर्म।

दशकंधर खुद नाश भयो, कर झूठ निशाचर कर्म।। सत्य.।।

धर्मराज हो गये विश्वपति, सत्य वचन मन कर्म।

नाश हुआ दुर्योधन करके, क्रूर असत्य कुकर्म।। सत्य.।।

गांधी बन गये अमर चलाके, सत्य अहिंसा धर्म।

अस्त्र–शस्त्र बिन मिली आजादी, बना लौह भी नर्म।। सत्य.।।

वृथा नाम को क्यूं करता मन, झूठ, कपट मय कर्म।

दिखा जगत को सत्य मार्ग, देवेन्द्र यही है धर्म।। सत्य.।।

भाग – 2 (मैथिली)

श्री अम्ब वन्दना

(1)

धन्य धन्य जनक धन्य थिक मिथिला।

जहं सिया लेल अवतार रे।। धन्य.।।

मिथिलापति के यज्ञ भूमि में, बहथि लक्ष्मणा धार रे।

सीतामढ़ी नगर जहां तह सीता, प्रकटी भूमि बिदार रे।। धन्य.।।

मातु सुनैना गोद खेलायलि, भेलि अवधपुर नार रे।

निशिचर सभ के नाश कराकय, भू के भार उतार रे।। धन्य.।।

बीच भंवर में नैया मेरी, नहि संगे पतवार रे।

करियौ कृपा दृष्टि दय मैया, भव सौं बेरा पार रे।। धन्य.।।

(2)

जखन बढ़ल भूमंडल रे, निशिचर दल भारी।

शोणित लय ऋषि मुनि सं रे, राखल भूमि गारी।। जखन.।।

पड़ल अकाल बरिस दश रे, मिथिला पुर भारी।

जहं गारल घट रिपु छल रे, लय लीघुर सारी।। जखन.।।

आज्ञा पाय गुरु सं रे, नृप भू हल गारी।

घट सं निकसलि जानकी रे, सब भेल सुखारी।। जखन.।।

नाश कराय सकल रिपुरे, भू भार उतारी।

धेरल मातु विषय रिपुरे, झट लेहु उबारी।। जखन.।।

(3)

जै जै हे मिथिलेश दुलारी।

जगत जननि रघुनाथ पियारी।। जै।।

हलक अग्र सं लेल अवतार।

कुण्ड उर्विजा केर मझार।। जै।।

नवमी शुक्ल मास बैसाख।

जन्म सिया केर बुध जन भाष।। जै।।

मिथिला घर–घर मंगल भेल।

सब केर पाप शमन भए गेल।। जै।।

पाणि जोड़ि मांगहुं वरदान।

करैत रही सदिखन गुणगान।। जै।।

(4)

जै गौरी गिरिराज कुमारी।

दक्ष सुता लए लेलि अवतारी।। जै।।

नारद बात मानि वन गेली।

शिव लय बड़ दारुण तप केली।। जै।।

ऋषि–गण आदि परीक्षा लेल।

मनवांछित फल के वर देल।। जै।।

व्याह भेल शंकर के साथ।

दुई बालक कार्तिक गणनाथ।। जै।।

चरण कमल में हो स्थान।

नहिं चाही दोसर वरदान।। जै।।

(5)

मिलय परम सुख तोर शरण में।

आबि खसल तैं मातु चरण में।। मिलय,।।

भेटल न शांति कतहुं मां जग में।

उड़य जेना पंछी नित नभ में।। मिलय,।।

हारि थकल करि सब परयास।

अंत में आयल मां तोर पास।।

आनक दुख मां दय के हमरे।

वांटि दियौ मोर सुख मां सगरे।। मिलय,।।

जूनि लिय दुःख दय जन के परीक्षा।

नहि चाही किछु यैह एक इच्छा।। मिलय,।।

(6)

जगदम्बा भवानी, आयल छी दुअरिया।

खोलू ने केवड़िया ना।।

हम सब बहुत दूर सं आयल, मां दर्शन के आस लगायल।

दर्शन दय के खोलू, हमर ज्ञान मोटरिया।। खोलू.।।

हम पूजा केर थारी लायल, रोली अक्षत फूल सजायल।

जग के देखि दशा मां बनल तोर पुजरिया।। खोलू.।।

हम माटी के दीप बनाओल, ओइ में घी के ज्योति जराओल।

मैंया करब आरती सांझ, भोर, दुपहरिया।। खोलू.।।

करय सुर, नर, मुनि सभ गान, मांगय भक्ति अहां सं दान।

हरियौ कष्ट दीन केर यैह करय अरजिया।। खोलू.।।

(7)

एक नजरि देखूं जगदम्बा, अर्ज करी मां तोहरा सं।

हम विसरी तँ बात अधिक नहिं, जूनि, रुसियौं मां हमरा सं।।

हम बालक छी बड़ अज्ञानी, गलती होइते रहत सदा।

कतबो अधमी छी हम तैयो, अहिंक छी हम पुत्र मुदा।

बिसरि गेलहुं की करबा चाही जग मे अयलहुं जहिया सं।। हम.।।

अबितहिं घेरल लोभ, मोह सभ, देलक पंथ भुला हमरा।

विचलित भए गेल बुद्धि, करा देलक मन मानस में झगड़ा।

वैह फंसल अछि एहि गध्य, ई बात सुनाबी जकरा सं।। हम.।।

दोष हमर की मातु जखन, ई समटा अछि अहिंक माया।

एहि जाल सं वैह वचय, जकरा पर हो अहिंक साया।

शरण में रखिया हमरो, सभटा दोष भुला कय हमरा सं।। हम.।।

(8)

तोहर चरण कमल के, कहिया दर्शन हेतै हे।

बिना दरश की मातु हमर ई जीवन जेतै हे । कहिया.।।

हे मैया बहुत दिन सं आसलगाकय, दिवस बितायल हे।

बाट अहां के देखैत देखैत नयन पिरायल हे।। कहिया.।।

हे मैया, जं–जं बीतय समय, होइत अछि मन में आब निराशा।

कतेक अभागल छी हम जननी, नहिं पूरय अभिलाषा।। कहिया.।।

करियौ जूनि विलम्ब जगदम्बा, भार भेल ई जीवन।

झांकी एक देखाकय पद के, करियौ आशा पूरण।। कहिया.।।

(9)

करुणा निधान हे जगदम्बा, महिमा अछि अहांक बड़ भारी।

होइछ तन पुलकित नाम लैत, मन सं मिटि जाइछ दुख सारी।। करुणा।।

अहीं छीं जग कर्त्ता–धर्ता त्रिभुवन के जननी हे मैया।

छथि सेवक पद के ब्रह्म रुद्र, ओ चक्र सुदर्शन धारी।। करुणा।।

छी आदि अंत आ मध्यहीन, कण–कण में व्यापित छी जग के।

अहीं छी सभ में जीव रुप, अछि अहीं में त्रिभुवन सारी।। करुणा।।

(10)

जै जै अम्ब असुर दल नासिनि, महिष संहारिणि माता।

जै स्कन्ध मातु महारानी, सुन नर मुनि सुख दाता।। जै जै।।

चंड–मुंड सभ के वध कारण, रूप भयंकर धारा।

कखनहुं रुप धयल काली के, कखनहुं चण्डी तारा।। जै जै।।

कखनहुं रुप धयल दुर्गा के, महासरस्वती ज्वाला।

क्षण में धारण पुष्पहार, क्षण ही में मुण्डक माला।। जै जै।।

नहि केओ जानय हे जग जननी की थिक अहांक माया।

चरण कमल के भक्ति दय, करियौ हमरा पर दाया।। जै जै।।

श्री अम्ब आरती

(11)

हे जगदम्ब देव आ मानव, आरति आई करैए।

महिषासुर के मरने चहुं दिश, जै जैकार मचैए।। हे.।।

कंचन थार जड़ल मणि ओइ में, घी के ज्योति जरैए।

संगहि कपूर, अगर, धूमन जरि, मह–मह–मह महकैए ।। हे.।।

घंट बजावथि सूर्य चंद्र ओ टन टन शब्द करैए।

संगहि ताल मिला धन–घन, इन्द्रक घड़ियाल बजैए ।। हे.।।

परि सभ नाचि रहल छम छम, घुंघरुक बोल निकलए।

गंधर्वक मिरदंग डमा डम डिमले सुर में बजैए ।। हे.।।

ब्रह्मा वेदक गान करथि नारद केर वीण बजैए।

कृष्णचंद्र केर मुरली सदिखन, सुमधुर सुर में बजैए ।। हे.।।

शंख बजय विष्णु के जग, प्रणवाक्षर मंत्र सिखैए।

बीच–बीच में शिव केर डमरु डिम–डिम नाद करैऐ ।। हे.।।

भक्त मुदित मन करथि आरती, धर्मक चंवर डुलैए।

सुर, नर, मुनि सब भक्ति हेतु, मां विनय अहाँके करैए ।। हे.।।

श्री शिव वन्दना

(12)

मातु मनाइनि रोवथि रे, भेल केहन जमाय।

परिछन सखि नहिं जाइछ रे, सब गेलि पराय।। मातु.।।

बैरी भेल नृपति हिम रे, खोजि लयला महेश।

फांस लगायल नारद रे गर, लाय उदेश ।। मातु.।।

बूढ़, संग हम न विआहब हे, धिया रहती कुमारि।

डूबंव जाय उमा संग रे, हम सिंधु मझारि ।। मातु.।।

गिरिजा मातु बुझायलि रे, नहि उचित विषाद।

जगतपती शिवशंकर रे, छथि ई अविवाद ।। मातु.।।

(13)

लयला हेमन्त ऋषि बुढ़वा जमाय, मैंना खसलि झमाय।

केश सभ पाकल जटा छिड़िआइ,

मुंह में बतीसी नहि बनल खटाई ।। मैना.।।

दश पांच सखि मिलि परिछन जाइ।

नाग के पुकार सुनि गेलनि पड़ाई ।। मैना.।।

बराती के शोभा किछु कहलो न जाइ।

बिना हाथ पर कतेक गनलो न जाइ ।। मैना.।।

हम न बिआहव एहन जमाई

धियालय मनाइनि रहलि नुकाइ ।। मैना.।।

गौरी दाइ मेना के कहलि समुझाइ।

विधिक लिखल बात मेटलो न जाइ ।। मैना.।।

शिव गिरिजा केर भेल बिआह।

मन दुख असुरन सुरन उछाह ।। मैना.।।

(14)

देखू करमक खेल।

एहन सुन्दर गौरी दाइ के वर बकलेल।। देखू.।।

अंग नहिं उबटन शिर नहिं तेल।।

भूषण वसन केर नामो नहिं लेल।। देखू.।।

चन्दनक बदला भभूत लेपि लेल।

मुख नहि एको दांत सब झड़ि गेल।। देखू.।।

बसहा सवारी मृगछाला ओढ़ि लेल।

डिम–डिम डमरु पे सुर छेड़ि देल।। देखू.।।

भूत प्रेत आगू पाछू करय सब खेल।

गौरी केर जन्म बेकार विधि देल।। देखू.।।

(15)

कतय गेला शिव, डमरु बजाकय।

निन्द हमर लए गेला चोराकय।। कतय.।।

डमरु बजायल, जियरा चोरायल।

धन दौलत सं नेह छोड़ायल ।। कतय.।।

लेलनि कर बसहा केर डोरी।

कांख दबायल भांगक, झोड़ी ।। कतय.।।

हारि थकलि गौरी चहुं ओर।

विनय करैत नयन बहे नीर ।। कतय.।।

प्रकट भेला शिव नन्दीक साथ।

हिम तनया भए गेलि सनाथ ।। कतय.।।

(16)

खाथि सदा शिव नित उठि भंग।

रहथि निरन्तर भूतक संग।।

नहि चाहथि ओ ओढ़न पीताम्बर।

हुनका चाही ओढ़न बाघम्बर।

नहि रथ हाथी, अश्व सवारी।

बसहा केर करथि असवारी।।

घरक अभावे रहथि मसान।

कय देल जग के सभ किछु दान।।

जग के दियौ भोला अन्न, धन, राज।

चरण भगति केर हमरा काज।

(17)

करहु सदा पूजन शिवशंकर।

गौरी संग जपहु प्रलयंकर।।

त्रिपुर दैत्य भेल बड़ अपकारी।

वध कैने भेला त्रिपुरारी।।

सुख देल जन के हानि दुर्जन के।

मेटल शोक सकल सज्जन के।।

कैलहुं नहि कुछ जप तप योग।

बूढ़ भैलहुं घेरल सभ रोग।।

जोड़ि पाणि मांगहु याह दान।

हरहु सकल जर के अज्ञान।।

(18)

गिरिजापति शिवशंकर दर्शन कहिया देबऽ हो।

दर्शन कहिया देबऽ हो।

बहुत दिन सं व्याकुल जियरा, मन घबराइछ मोर।

नैना प्यासल चरण कमल के दरश करै लय तोर।। दर्शन।।

पूजा के हम रीत न जानी, जानी विनय न तोर।

ध्यान लगाय कोना कय वैसी, सभुझि पड़य नहि मोर।। दर्शन।।

औढ़र दानी नाम अहां के, सुनबा आयल मोर।

याह विंचारि त्यागि सब किछु हम, शरण में आयल तोर।। दर्शन।।

(19)

आयल माघ के अन्हार, करु कामरु के तैयार।

चलु सभ कमरथुआ शिव नगरी।।

बीतल चारि अन्हार, शुभ दिन पंचमी छै तैयार।

लागल कमरथु के भरमार, नगर डगरी।। आयल.।।

छोड़ल घर, बीत अम्बार, बढ़ल बाबा के दरबार।

भोला नाम करैत पुकार, डगर सगरी।। आयल.।।

पहुंचल अजगैबी के तीर, दिन अमावस बोझल नीर।

कयय पूजा भैरव वीर, भोला के प्रहरी।। आयल.।।

पहुंचल छी पंचमी दरबार, बम सभ दर्शन के तैयार।

बढ़ल भीड़ में अपार रगड़ रगड़ी।। आयल.।।

ढ़ारल जल, अक्षत आ फूल, भलै दुःख आ अब निर्मूल।

कमरथु किछु दिन सब सुख भूल, चलह संग हमरी।। आयल.।।

(20)

चलु चलु कमरथु बाबा के नगरिया, लए गंगाजल भार रे।

बोझब जल सुल्तानगंज में, पहुंचायब दरबार रे।। चलु.।।

कबहुंक डेरा रहत बाग में कबहुं रहत खलिहान रे।

कबहुंक रहत किनार सरिता के, कबहुं पहाड़ मसान रे।। चलु.।।

राह चलैत मचत कोलाहल, चहुं दिश जै–जै कार रे।

हर शिव हर शिव नाम रटैत सभ, पहुंचब भोलाक द्वार रे।। चलु.।।

ईर्ष्या द्वेष भुलायक सभ जन करब महेशक ध्यान रे।

बैद्यनाथ गंगाजल ढारब, मिटि जायत अज्ञान रे।। चलु.।।

(21)

भोला आस पुराबहु मोर।

आयल छी हम सभ कमरथुआ, दरश करै लए तोर।।

योजन बींस पांच सं आयल, चलि कय गोरे गोर।

राह चलैत पखवारा बींतल, टूटल देहक पोर।। भोला.।।

बहय पैर सं शोणित, फूटल राह चलैत कठोर।

कान्हक दर्द सहल नहि जाइछ नैन वहैये नोर।। भोला.।।

लायल छी सुल्तानगंज सं बोझि खजाना तोर।

गंगाजल तोहरा शिर ढ़ारब यैह मनोरथ मोर।। भोला.।।

(22)

आयल हम मिथिला वासी।

दर्शन लए हे अविनाशी।। आयल.।।

घर सं पैदल छी आयल।

कामरु गंगाजल लायल।

देल भुला सब दुःख हांसी।। दर्शन.।।

राह चलैत पैर घीसल।

घाम सं कन्हा तीतल।

ओ दुःख जाय न मुख भाषी ।। दर्शन.।।

ढारब शिर पर गंगाजल।

मांगी नहि किछु भौतिक फल।

चरण कमल के अभिलाषी ।। दर्शन.।।

श्री राम वन्दना

(23)

अवधपुरी सं पाहुन आयल, ऋषि कौशिक के साथ रे।

राम लखन दशरथ के बालक, धनुष बाण लए हाथ रे।। अवध.।।

बिनु फर वाण मारि मारीच के, फेंकल सिंधुक पार रे।

हनल तारिका घोर निशाचरि, आज्ञा गुरुक विचारि रे।। अवध.।।

गौतम–तिय के चरण धूलि सं, भेजल पति के धाम रे।

क्षण में तोड़ल शिव पिनाक के आबि जनकपुर राम रे।। अवध.।।

ब्याह रचायल वैदेही संग, सभक पुरल अरमान रे।

जोड़ी रहय सदा हिय मेरो, मांगी हम वरदान रे।। अवध.।।

श्री कृष्ण वन्दना

(24)

सुनि लय यशोदा मैंया अरज हमार।

बड़ दुःख देबय लाल तोहार।। सुनि.।।

संगी संग करय नित चोरीं।

खा जाय माखन दहि मोरी।। सुनि.।।

उलटे हमरे चोर बनावय।

अपने घर मालिक बनि जाय ।। सुनि.।।

मटुकी फोड़ि देखायब रोष।

बरजी नहिं तकरे सब दोष।। सुनि.।।

ई कहि देखय हरि मुख हाल।

जानि हंसल मां गुजरिक चाल।। सुनि.।।

(25)

देखन लय वृषभानु दुलारी।

बैद्य बनल छथि कृष्ण मुरारी।। देखल.।।

गोकुल घुमथि वेश बनाई।

घर–घर बेचथि जाय दवाई।। देखल.।।

घर सं निकसलि राधा रानी।

गेलिलजा प्रियतम पहिचाानी।। देखल.।।

दुहुक मनोरथ पूरन भेल।

एक दोसर के जीवन देल।। देखल.।।

(26)

कहुं कहुं सखि सब कहं मनमोहन।

चैन पड़य नहिं बिनु हरिदर्शन।। कछु.।।

ई कहि राधे खसलि झमाय।

प्रेम बिरह सुधि देलि भुलाय ।। कछु.।।

ललिता लायलि कृष्ण बजाय।

अबितर्हि पिय के उठलि चेहाय ।। कछु.।।

नैन थकित भेल रुप निहारि।

नित भेटक हरि कैल करारि।। कछु.।।

(27)

मनमोहन सं रूसलि रे, वृषभानु दुलारी।

फिरि बैसलि दोसर दिशरे, झुकि भूमि निहारी।। मन.।।

टेढ़ि नजरि सं ताकथि रे, लेल मुख लटकाई।

लाल भयल मुख चंपक रे, तामस अधिकाई।। मन.।।

कर धय कृष्ण मनावथिं रे, कखनहुं धय माथ।

खन मुख नयन विलोकथि रे, खन जोड़थि हाथ।। मन.।।

प्रण केलनि नहि जायब रे, हम ककरहु संग।

हंसि उठलि, मुख आयल रे, पुनि चम्पक रंग।। मन.।।

(28)

राधे तोहे जूनि रूसह आब।

तांमस रूप करय मन घाव।। राधे.।।

देखि जिया घबराय हमार।

बिगरल रुपक रंग तोहर।। राधे.।।

हम नहि जानि मनयबाक हाल।

समुझि पड़य नहि नारिक चाल।। राधे.।।

जं रुसब हम छोड़ब नगरी।

वृन्दावन के बिसरब डगरी।। राधे.।।

सुनतहिं उठल छोड़ि सब मान।

विहंसि श्याम सं कैलि मिलान।। राधे.।।

(29)

सखि सब मिलि कय करय विचार।

केहि विधि रोकब नन्द कुमार।। सखि.।।

आयल दूत बजाबय लेल।

ब्रज संमधुपुर के चलि भेल।। सखि.।।

जानि विछोह विकल सखि भेल।

पथ रोकई लय आतुर भेल।। सखि.।।

घेरल रथ सब तजि कुल लाज।

देख चकित भेल देव समाज।। सखि.।।

प्रेम विवश भए गोपीनाथ।

मधुर वचन कहि कैल सनाथ।। सखि.।।

(30)

हंसि हंसि प्रीति लगाय मन मोहन, बसि गयो मधुपुर देश।

मन के लुभाय लेल जियरा चुराय लेल, बना कय नटवर वेश।। हंसि.।।

बिसरल गोकुल वन, वृन्दावन, जहं कैंल सखि संग रास।

गाछ कदम्ब लगाय हिंडोला, झूलल सावन मास।। हंसि.।।

कर सं उठाय लेल गिरि गोवर्धन, अभय कयल बृजधाम।

बाल सखा संग गौआ चरायल, संग संग लए बलराम।। हंसि.।।

कृष्ण विरह में विकल भए गोपी, लागल करय विलाप।

प्रेमक कारण पुलकित भए तन, मन महं भेल मिलाप।। हंसि.।।

(31)

कहु सखि, कहू सखि कंह चितचोर।

लए गेल सुख सब, दय दुःख मोर।। कुछ.।।

बाट जोहैत दिवस बिति जाय।

पड़इत सांझ जिया घबराय ।। कुछ.।।

नींद बिना बीतय नित रात।

देखि देखि सपन होबय नित प्रात।। कहुं.।।

मोहन बिनु निकसय चहं प्राण।

कहू केहि विधि, हम पाबऊं त्राण ।। कहुं.।।

(32)

सुधि ना लियो मनमोहन रे, तजि गोकुल धाम।

जाय बसे मथुरापुर रे, मोर विधि भेल वाम।। सुधि.।।

सून लगय मोहे नगरी रे, सून यमुनाक तीर।

देखि कदम्ब बिटप तहं रे, चित रहय न थीर।। सुधि.।।

ना भावे वृन्दावन रे, जहं गाय चराये।

बाल सखा संग मिलिकय रे, माखन दहि खाय ।। सुधि.।।

केहि विधि राखहुं जीवन रे, यह भयो अब भार।

तजिहौं एहि विलम्ब नहि रे, कछु रह्यो नहि सार।। सुधि.।।

(33)

आजु सखि सपना हम देखल।

घर आयल नन्द लाला।। आजु.।।

मधुर–मधुर सुर वंशी बजावय।

गावय संग सुरबाला।। आजु.।।

मोर मुकुट पीताम्बरधारी।

उर बैजन्तीक माला।। आयल.।।

मंद–मंद मुसकान मनोहर।

बिजुरी चमके घन माला।। आयल.।।

अकचकाय शैया हम त्यागल।

युगल चरण शिर डाला।। आयल.।।

दय आशीध लगायल हिय सं।

श्रीपति यशोमति लाला।। आयल.।।

(34)

हम न जियब बिनु श्याम।

हे बहिना, हम न जियब बिनु श्याम।। हे बहिना.।।

कंसक दूत बजा कय लय गेल।

अनुज सहित बलराम।। हे बहिना.।।

लाजे नहिं रोकल हम मोहन।

भेल विधाता वाम।। हे बहिना.।।

कुब्जा के संग नेह लगाकय।

भूलल गोपीक नाम।। हे बहिना.।।

डूबि मरब हम जा यमुना में।

गोकुल सं नहिं काम।। हे बहिना.।।

दहकय देय विरह ज्वाला में।

तजि जायब जहं श्याम।। हे बहिना.।।

(35)

मथुरा नगर सं आयल ऊधव, लायल हरिक संदेश रे।

घेरल सखि सब कृष्ण सखा के, होइ तहिं उदय दिनेश रे।। मथुरा.।।

कित घनश्यामक कतय बल भैया, की भेजल संदेश रे।

अयता कबहुं खबरि लेबैइलय, की बिसरल ब्रज देश रे।। मथुरा.।।

पत्र पढ़ाय सुनल सब गोपी, हिय सं लेल लगाय रे।

तजि कय शोक सकल जन हमरा, मन में लेहुं बसाय रे।। मथुरा.।।

लागल ध्यान क्षणहिं में सबके, देल दरश नन्दलाल रे।

देखि अलौकिक प्रेम सखी के ऊधव नवायल भाल रे।। मथुरा.।।

(36)

ऊधो बड़े दुःख दीनि कन्हाई।

हम सब भोली ब्रजवाला संग, हंसि हंसि प्रीति बढ़ाई।। ऊधा.।।

वंशी बजा बजा कय सभ के, नैनन नींद चुराई।

राज पाट सभटा हम त्यागल, धैल हुंनक शरणाई।। ऊधा.।।

यमुना तट पर रास रचाकय, चित कोलीन चुराई।

देल बिसारि बंधु, सुत, सब, हरि सं नेह लगाई।। ऊधा.।।

आयब शीघ्र वचन दय हमरा, नहीं आयो यदुराई।

त्यागब देह नेह के कारण, विरह सहल ना जाई।। ऊधा.।।

(37)

भरलू सभा में करय द्रोपदी पुकार।

लाज मारी राखहुं आब यशोदा कुमार।।

पांचो भाई जुआ मे हारल,

अंत दाव हमरा के डारल।

पहिनहि जिति लेल धन कौरव,

छल सं राज–पाट घर बार।। लाज.।।

दुष्ट दुःशासन खींचय साड़ी।

देखय मौन सकल नर नारी।

गुरुजन माथ नवा कय वैसल,

सबहक बल पौरुष बेकार।। लाज.।।

देखि कष्ट अबला के भारी।

वसन रुप भेला गिरिधारी।

दुःशासन के भुजा पिरायल,

साड़िक बड़का भेल पहाड़।। लाज.।।

श्री हनुमान वन्दना

(38)

विनय करी कर जोड़ि अहां के, सुनियौ पवन कुमार यौ।

डोलय नाव भवर में डगमग, करियौ अब किनार यो।। विनय.।।

जारल स्वर्णमयी लंका के, लांधि समुद्र अपार यो।

देल मुद्रिका जनक सुता कें, भेजल अवध कुमार यो।। विनय.।।

आज्ञा मांगी खाय लागल फल, वन अशोक में जाय यो।

खेलहिं खेल उखाड़ल सब तरु, निशिचर मारल धाय यो।। विनय.।।

लायल सीता केर संदेशा, चूड़ामणि के साथ यो।

हिय सं लेल लगाय मुदित भय, कुशल पुछि रघुनाथ।। विनय.।।

श्री गंगा वन्दना

(39)

आयल कातिक मास हे बहिना।

चलु चलु गंगा स्नान हे।।

भोरहिं भोर नहायब सुरसरि।

करब दिवाकर ध्यान हे बहिना।। चलू.।।

अधम उधारणि भागीरथीं तट।

ंवास करब भरि मास हे बहिना।। चलू.।।

सुनि हरि कथा पुराण करब हम।

जनम–जनम अघनाश हे बहिना।। चलू.।।

पूजब राम सिया, शिव गिरिजा।

पवन पुत्र हनुमान हे बहिना।। चलू.।।

सकल शोक मिटि जायत जखानहिं।

भेटता संत महान हे बहिना।। चलू.।।

(40)

बिसरल सभ दुख आबि अहां तट, विष्णु पदी हे गंग।

हाहाकार मचय हिय मेरो, सुनितहिं छुटत संग।। बिसरल.।।

त्रिभुवन तारण नीर अहां के, राखल ब्रह्म कमंडल।

शंकर जटा मध्य झडि आयल तारइ लय भूमंडल।। बिसरल.।।

कपिल शाप जरल सब नृप सुत, सगरक साठि हजार।

करुणावश लए भस्म अंक में, कयल सभक उद्धार।। बिसरल.।।

पुनि पुनि नाबी माथ हे जननी, विनय करी बहुं बार।।

झट दर्शन लए फेर बजेबै, हमरो अपन किनार।। बिसरल.।।

होली समवेत

(41)

भूतक संग होरी खेलथि भोला।। भूतक.।।

एक हाथ डमरु दोसर मृग छाला।

कमर में शोभनि बाघ छाला।। भूतक.।।

गंग बहति कल–कल मस्तक सं।

गला में शोभनि मुण्ड माला।। भूतक.।।

भूत प्रेत सब नाचय गावय।

पी कय सब भांगक गोला।। भूतक.।।

उड़य भभूत चहुं दिश नभ में।

सुन, नर, मुनि निज सुधि भूला।। भूतक.।।

(42)

शिव के देखियौन गे माई।

गौरी संग खेले छथि होरी, भभूत अबीर उड़ाई।। शिव.।।

एक हाथ त्रिशूल सुहाये, दोसर डमरु सुहाई।

गंग बहै छन्हि जटा मध्य सं, गले नाग लपटाई।। शिव.।।

भूत प्रेत सभ चहुं दिश मिलिकय, चट–चट ताल बजाई।

योगिन होरिक गीत सुनाकय, गौरीक मन बहलाई।। शिव.।।

बाजय ढ़ोलक झालि, मजीरा, अरु बाजय शहनाई।

ताण्डव नृत्य करयि शिवशंकर, डिम–डिम डमरु बजाई।। शिव.।।

(43)

नहिरा में अम्ब खेलथि होरी।। नहिरा.।।

एक हाथ लेने भरल पिचकारी।

पीयर लाल रंग घोरी।। नहिरा.।।

दोसर हाथ में शोभय सुन्दर।

अबीर गुलाल मिल झोरी।। नहिरा.।।

सखि संग खेलथि रंग भवानी।

अबीर लगावथि बरजोरी।। नहिरा.।।

प्रेम सुधा में भीजय त्रिभुवन।

विनय करय सब कर जोरी।। नहिरा.।।

(44)

राम खेलय जनकपुर होरी।

एक हाथ शोभय पिचकारी। एक अबीरक झोरी।। जनक.।।

कबहुं उड़ावत रंग गगन में। कबहुं सखी रंग बोरी।। जनक.।।

अबीर गुलाल उड़ाकय नभ में। लाल करय चहुं ओरी।। जनक.।।

पीताम्बर भीजल लाली में। भीजल हाथक झोरी।। जनक.।।

सखि संग ठाढ़ सिया ओटन में। देखथि चंद्र चकोरी।। जनक.।।

(45)

होली खेलथि रघुनंदन रे, वैदेहिक संग।

हाथ अबीरक झोरी रे, आओर लेल रंग।। होरी.।।

ढारल रंग वसन पर रे, वहुं भरल उमंग।

लाल बनल पीताम्बर रे, संग साड़िक रंग।। होरी.।।

अबीर गुलाल लगा मुख रे, बदलल निज रंग।

जोड़ि देखि लजायल रे, रति संग अनंग।। होरी.।।

सुर गण रुप निहारथि रे, लए तिय निज संग।

वर्षा करथि सुमन केऽरे, नभ सं बहु रंग।। होरी.।।

(46)

चलु सखि, चलु सखि होरी खेलै लए।

दशरथ सुत के रंग धरै लए।। चलु.।।

मानव आजु न एकहु बतिया।

करब हुनक सभ मिलि दुरगतिया ।। चलु.।।

ढारब रंग भरल पिचकारी।

लाल करब रंग हुंनकर कारी ।। चलु.।।

अबीर लगाकय मुख चमकायब।

भरि मिथिला में नाच नचायब ।। चलु.।।

घर–घर गायब होरिक गीत।

जीवन सुफल पाय मनमीत ।। चलु.।।

(47)

होली खेलय सखि सब मिलिकय रे, रघुनंदन संग।

धयल अबीर एक कर रे, दोसर कर रंग।।

अबीर लगायल मुख में रे, ढारल सब रंग।

गावय गीत मनोहर रे, सभ भरल उमंग।।

थर–थर कांपथि पात सम रे, सिय पिय केर अंग।

पकड़ि घुमावथि सखि सभ रे, वैदेहिक संग।।

बाजय झालि मजीरा रे, डफ ढोलक संग।

उड़य गुलाल चहूं दिश रे, मिलि घोरल रंग।।

(48)

आयल वसंत ऋतु बोलय कोयलिया,

होलीक आयल बहार रे।। आयल.।।

रंग गुलाल उड़य ब्रजमंडल,

भीजल नन्द कुमार रे।। आयल.।।

किनका हाथ सोभय पिचकारी,

किनका हाथ गुलाल रे।। आयल.।।

ललिता हाथ सोभय पिचकारी,

राधिका हाथ गुलाल रे।। आयल.।।

धायल सखिसब छोड़ि महल के,

रंगक उड़य फुहार रे।। आयल.।।

ग्वाल बाल सभ नाचय गावय,

सभक रंगल दुहुं गाल रे।। आयल.।।

बाजय ढोलक झालि मजीरा,

अरु बालय करताल रे।। आयल.।।

सुनि वंशी के तान मनोहर,

सभक हाल बेहाल रे।। आयल.।।

(49)

चलु सखि, चलु सखि खेलय होरी।

मोहन संग करय बरजोरी।। चलु.।।

बदला लेब पहिलुका आई।

घेरब सभ सखि मिलि कय धाई।। चलु.।।

ढारब रंग भिजायब चीर।

मोहन, संग धरब बलवीर।। चलु.।।

वंशी छीनि नचायव नाच।

जे सभ सोचलि कैलन्हिं सांच।। चलु.।।

(50)

सखि सभ चललि भवन सं सजनी गे।

पथ रोकल नंदलाल।।

ग्वाल बाल सभ आयल सजगी गे।

लय रंग घोरल लाल।।

रंग बरिसाबय मोहन सजगी गे।

भीजय गोकुलक नारी।।

राधाक भीजल वसन सब सजनी गे।

ललिताक भीजल साड़ी।।

अबीर लगायल मुख पर सजगी गे।

बांहि पकड़ि बरजोरी।।

छिनि माखन सभ खा गेल सजगी गे।

मटुकी फेकल सभ झाड़ी।।

(51)

होली खेलथि यदुनन्दन रे, राधा केर संग।

धयल अबीर ग्वाल सभ रे, मोहन कर रंग।।

देल भिजाय वसन सभ रे, ढ़ारल हरि रंग।

अबीर लगायल मुख में रे, भरि परम उमंग।। होली.।।

लाल बनल पीताम्बर रे, राधा देलि रंग।

मुख भेल लाल अबींरन रे, छुपि गेल कुरंग।। होली.।।

देखथि देव सकल मिलि रे, सुरपति केर संग।

धन्य–धरनि जंह खेंलथि रे, राधा हरि रंग।। होली.।।

।। समाप्त।।

जयतु गुरुदेवः



परम पूज्य श्री श्री १००८ मौनी बाबा (गुरुदेव)

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः
गुरुर्देवो महेश्वरः ।
गुरुःसाक्षात् परब्रह्म
तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥

सीता जनम मंगल

सियाजी के भेलई जनमवा,

चलुहे करि आइ दरशनमा ।।

नवमी शुक्ल मास बैसाख,

जन्म सिया केर बुधजन भाख ।

नृप विदेह-मख-महि-मा ।।

सीतामहि केर भूमि पुनीता,

प्रगटी अष्ट सखी संग सीता ।

देव-ऋषि नाम धरनमा ।।

मध्य दिवस अति शीत ना घामा,

पावन काल लोक विश्रामा ।

मन्द- मन्द बहय पवनमा ।।

मातु सुनयना पलना झुलावे,

अलिगन पंखा चँबर डुलावे ।

लखि- लखि हुलसे परनमा ।।

युग- युग जियो बैदेही माता,

सुर नर मुनि सब के सुख दाता ।

भगति बृष्टि बरसनमा ।।

सौजन्य - श्री मौनी बाबा